Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3 | अंक 6

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

8 फरवरी 2018 ई. 21 जमादी अव्वल 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मेरी रूह हलाक होने वाली नहीं है और मेरी प्रकृति में असफलता का बीज नहीं है
मुझे वह हिम्मत और सच्चाई प्रदान की गई है जिस के आगे पहाड़ तुच्छ हैं।
उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हे अज्ञानियो और अन्धो मुझ से पहले कौन सच्चा नष्ट हुआ है जो मैं नष्ट हो जाऊंगा। सच्चे वफादार को ख़ुदा ने अपमान के साथ हलाक कर दिया जो मुझे हलाक कर देगा और कान खोल कर सुनो को मेरी रूह हलाक होने वाली नहीं है और मेरी प्रकृति में असफलता का बीज नहीं है मुझे वह हिम्मत और सच्चाई प्रदान की गई है जिस के आगे पहाड़ तुच्छ हैं। मैं किसी की परवाह नहीं करता। मैं अकेला था और अकेला रहने पर नाराज़ नहीं क्या ख़ुदा मुझे छोड़ देगा कभी नहीं छोड़ेगा क्या वह मुझे नष्ट कर देगा कभी नहीं नष्ट करेगा। दुश्मन अपमानित होंगे और द्वेष करने वाले लज्जित और ख़ुदा अपने बन्दा को प्रत्येक मैदान में फत्ह देगा। मैं उस के साथ और वह मेरे साथ है कोई चीज़ हमारा सम्बन्ध तोड़ नहीं सकती और मुझे उस के सम्मान और प्रताप की कसम है मुझे दुनिया और आख़रत में उस से अधिक कोई चीज़ भी प्यारी नहीं कि उस के धर्म का सम्मान प्रकट हो उस का जलाल चमके और उस का बोल बाला हो। किसी परीक्षा से उस के फज़ल के साथ मुझे भय नहीं यद्यपि एक परीक्षा नहीं करोड़ों परीक्षाएं हों। परीक्षाओं के मैदान में और दुखों के जंगल में मुझे ताकत दी गई है।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 22, पृष्ठ 121)

☆ ☆ ☆

123 वें जलसा सालाना कादियान की संक्षिप्त रिपोर्ट (जलसा सालाना के आरम्भ से 126वां साल) (भाग-2)

अहमदियत के केन्द्र कादियान दरुल-अमान में 123 वें जलसा सालाना का सफल आयोजन।

☆ मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया इन्ट्रनेश्नल के द्वारा हज़रत अमीरुल-मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के जलसा में शामिल होने वालों को ईमान वर्धक समापन ख़िताब। ☆ देशों का प्रतिनिधित्व, 20,048 अहमदियत के परवानों का जलसा में शामिल होना। ☆ हुज़ूर अनवर के समापन सत्र के अवसर पर लंदन में 5,300 अहमदियत के परवानों का शामिल होना। ☆ नमाज़ तहज्जुद, ☆ दर्सुल कुरआन और ज़िक्र से परिपूर्ण वातावरण ☆ उलमा की महत्त्वपूर्ण तकरीरें, ☆ सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन, सम्माननीय मेहमानों की परिचयात्मक तकारीरें ☆ घरेलू और विदेशी भाषाओं में अनुवाद ☆ जमाअत के दोस्तों की जानकारी में वृद्धि के लिए प्रशिक्षण पर आधारित डॉक्यूमेंट्री और विभिन्न जानकारीपूर्ण प्रदर्शनियों का आयोजन। ☆ 32 निकाहों का एलान ☆ प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जलसा की कवरेज ☆ शांत और सुखद मौसम में जलसा की सभी कार्रवाई की तकमील। 20 से 22 दिसंबर अरबी कार्यक्रम "इस्मउ सौतस्समा जाअल मसीह जाअल मसीह का कादियान के एम टी ए से सीधा प्रसारण , 3 से 5 जनवरी The Messiah of the Age के विषय पर अफ्रीका के लिए लाइव कार्यक्रम का प्रसारण

पहला दिन -दूसरा इजलास

नमाज़ ज़ोहर तथा असर के बाद पहले दिन का दूसरा इज्लास दोपहर 2 बज कर 15 मिनट पर आदरणीय मौलाना मुहम्मद इनाम ग़ैरी साहिब नाज़िर आला और अमीर जमाअत अहमदिया कादियान की अध्यक्षता में शुरू हुआ। बैठक की कार्यवाही कुरआन की तिलावत से हुई, जो आदरणीय तारिक अहमद तारिक ने की थी। आप ने सुरत अस्सफ की आयतें 7 से 10 पढ़ीं। आदरणीय एम नासिर अहमद साहिब, नायब नाज़िर इस्लाहो व इर्शाद साऊथ हिंद ने आयतों का अनुवाद किया। आदरणीय नस्रुम्मिनल्लाह साहिब शिक्षक जामिया अहमदिया कादियान ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मनज़ूम कलाम

निशां को देखकर इंकार कब तक पेश जाएगी
अरे इक ओर झूठों पर क़यामत कब आएगी

अच्छी आवाज़ में पढ़ा।

* इस सत्र की पहली तक़रीर आदरणीय इनायतुल्लहा साहिब एडिशनल नाज़िर इस्लाहो इरशाद बराए तालीमुल कुरआन और वक्फे आरज़ी ने "मौजूदा ज़माना में कुरआन की शिक्षा की ज़रूरत ,महत्व, और जमाअत के पदाधिकारियों की जिम्मेदारियां" के विषय पर की। आप ने सूरत जुम्अ: की आयत 3 और 4 की लितावत की और अनुवाद पेश किया। फिर कहा: इन आयतों में सय्यदना हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दो प्रादुर्भाव और आप

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

की ज़िम्मददारियों का वर्णन है। और उन महान ज़िम्मेदारियों का उल्लेख है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होने वाली आख़री और चिरस्थायी शरीयत कुरआन मजीद की प्रत्येक युग में आवश्यकता तथा महत्तव को बताता है। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रथम प्रादुर्भव उस ज़माना में हुआ जब अरब में चारों और अन्धकार और गुमराही का ज़ोर था और मानव जाति की हालत बुरी से बुरी हो रही थी इस का नक्शा अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इन शब्दों में खींचा है ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ अर्थात खुश्की और तरी सारे स्थानों में फसाद ही फसाद छाया हुआ था। इस अन्धकार के युग में अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस पूर्ण और आख़री शरीयत अर्थात कुरआन मजीद के साथ भेजा। और आप ने ख़ुदा तआला द्वारा प्राप्त शक्तियों के द्वारा मानव जाति को पवित्र करने का काम किया।

आप ने कुरआन मजीद , हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और आप के ख़लीफाओं के उपदेशों की रोशनी में कुरआन की शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्त्व पर प्रकाश डाला। आप ने सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के कुछ उपदेश भी पेश किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने ख़ुत्बा 24 सितम्बर में फरमाते हैं प्रत्येक अहमदी को इस बात की फिक्र करनी चाहिए कि वे ख़ुद भी और उस के बीवी बच्चे भी कुरआन करीम पढ़ने और इस की तिलावत करने की तरफ ध्यान दें फिर अनुवाद पढ़ें फिर मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की तफ्सीर पढ़ें। फरमाया कि अगर हम कुरआन करीम को इस प्रकार नहीं पढ़ते तो चिन्ता करनी चाहिए और प्रत्येक को अपने बारे में सोचना चाहिए कि क्या वह अहमदी होने के बाद इन बातों पर अमल न कर के अहमदियत से दूर तो नहीं जा रहा। फरमाया अत: प्रत्येक अहमदी को याद रखना चाहिए कि हमें भी जो कुछ मिलना है कुरआन करीम की बरकत से ही मिलना है और बरकत इस के आदेश पर अनुकरण करने से ही है।

इसी प्रकार हुज़ूर अनवर ने अपने ख़ुत्बा 23 जून 2017 ई में जमाअत के उहदेदारों को उन की ज़िम्मेदारियों के हवाले से फरमाया कि

फिर रमज़ान में विशेष रूप से क़ुरआन पढ़ने, सुनने की ओर ध्यान पैदा होता है। कई लोग कोशिश करते हैं कि कम से कम क़ुरआन का एक दौर पूरा कर लें क्योंकि यह सुन्नत भी है लेकिन साथ ही इस महीने में क़ुरआन की तिलावत की ओर तवज्जो और व्यवस्था इस ओर भी ध्यान दिलाने वाली होनी चाहिए कि अब हमें प्रतिदिन नियमित क़ुरआन के कुछ भाग की तिलावत करनी है।

अल्लाह तआला ने जहां नमाज़ों के विभिन्न समयों की ओर ध्यान दिलाया है और इसका महत्त्व वर्णन फरमाया है वहाँ यह भी कहा है कि-

وَ قُرْآنَ الْفَجْرِ - اِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا

(बनी इस्राईल-79) अर्थात फजर की तिलावत की भी महत्त्व दो बेशक फज्र को क़ुरआन पढ़ना ऐसा है कि उसकी गवाही दी जाती है। अत: क़ुरआन पढ़ना केवल विशेष दिनों तक ही विशेष नहीं किया गया बल्कि नमाज़ के साथ उसे वर्णन करके उसका महत्त्व समझाया गया है।

फिर तिलावत के साथ इसे समझने की ज़रूरत है उसका अनुवाद पढ़ने की ज़रूरत है, ताकि अल्लाह तआला के आदेश का भी हमें पता चले और इस ज़माने में तो विशेष रूप से इसे नियमित पढ़ने की ज़रूरत है जब मुसलमान कहलाने वाले भी उसकी शिक्षा भुला बैठे हैं।

अपनी तकरीर के अन्त में आप ने फरमाया अल्लाह तआला हम सब को विशेष कर के जमाअत के उहदेदारों को सय्यदना हज़रत ख़लीफुतल मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उपदेश को सामने रखते हुए तालीमुल कुरआन के बारे में अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

इज्लास की दूसरी तक़रीर आदरणीय मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर साहिब नाज़िर दावत इलल्लाह मर्किज़या कादियान ने "सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम सहिष्णुता और उच्च हौसला के आलोक में" के विषय पर की। आप ने सूरत अस्सफ की आयत नम्बर 7 की तिलावत की और अपनी तकरीर के शुरू में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ये शेर पढ़े।

गलियां सुन के दुआ दो पा के दुख आराम दो
किब्र की आदत जो देखो तुम दिखाओ इन्किसार
गालियां सुन के दुआ देता हूं उन को
रहम है जोश में और ग़ैज़ घटाया हम ने

आप ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सहिष्णुता और हौसला के कई ईमान वर्धक घटनाए सुनाईं। जिन में से एक घटना नीचे लिखी जाती है। मिर्ज़ा इमामुद्दीन और मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन ने 5 जनवरी 1900 ई को हज़रत मसीह मौऊद और आप के सहाबा को कष्ट पहुंचाने के लिए और तंग करने के लिए मस्जिद मुबारक के नीचे से जाने वाली गली को इंटों की दीवार बना कर बन्द कर दिया। जिस से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सहाबा और आप के मेहमानों को मस्जिद मुबारक जाने के लिए दूसरा लम्बा चक्कर वाला और ख़राब रास्ता प्रयोग करना पड़ता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने अपने कुछ सहाबा को मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब के पास भेजा कि इन्हें बड़ी नर्मी से समझाएं क यह रास्ता बन्द न करें इस से मेरे मेहमानों को तकलीफ होती है। और यह पेशकश की कि अगर आप चाहें तो मेरी कोई और जगह ले कर उस पर कब्ज़ा कर लें। मिर्ज़ा इमामुद्दीन यह सुनते ही ग़ुस्सा में आग बबूला हो गया कि वह(अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम) ख़ुद क्यों नहीं आया। मैं तुम लोगों को क्या जानता हूं। फिर उपहास करते हुए कहा कि जब से वह्यी आनी शुरू हुई है मालूम नहीं कि इस को क्या हो गया है।

आप ने ज़िला के हाकिम और डिप्टी कमिशनर गुरदासपुर के पास वफद भेज कर अपनी मुश्किलों को दूर करने के लिए लिखा। परन्तु डी सी के व्यवहार भी बहुत विरोधपूर्ण था। जब इस मुश्किल को दूर करने के सारे रास्ते बन्द होते नज़र आए तो आप ने गुरदासपुर ज़िला जज की अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। 12 अगस्त 1901 ई में इस मुकदमा का फैसला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के हक में हुआ। और ज़िला जज ने मिर्ज़ा इमाम दीन पर खर्च के इलावा एक सौ रूपया जुर्माना भी डाल दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वकील ने हुज़ूर को सुचना और परामर्श के बिना ही खर्च की डिग्री ले कर इस का अमल करवा दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम उस समय गुरदासपुर में ठहरे हुए थे। आप के कादियान से ग़ैर हाज़िर होने की हालत में सरकारी आदमी कादियान आया। मिर्ज़ा इमाम दीन तो उस समय फौत हो गए थे। मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब ज़िन्दा मौजूद थे। परन्तु उन की हालत एसी थी कि वह रकम अदा नहीं कर सकते थे और कुर्की के सिवा कोई रास्ता नहीं था। इसलिए उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सेवा में रकम माफी का निवेदन किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को जब इस की सूचना मिली। तो आप ने फरमाया मुझे रात नींद नहीं आएगी इसी समय आदमी कादियान भेजा जाए जो कह दे कि हम ने खर्च माफ कर दिया। इस के साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम में क्षमा चाही कि मेरे ज्ञान में लाए बिना डिग्री जारी कर दी गई थी।

आप अपनी स्थिति का नक्शा खींचते हुए बयान फ़रमाते हैं कि:

मैं कसम खाकर कहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति जिसने मुझे हज़ारों बार दज्जाल और कज़्ज़ाब कहा हो और मेरे विरोध में हर तरह की कोशिश की हो और वह सुलह का इच्छुक हो तो मेरे दिल मैं उसके बारे में भी सोच भी नहीं आ सकती कि उसने मुझ से क्या कहा था और उसने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया था।

इस सत्र की तीसरी और अंतिम तक़रीर आदरणीय मौलाना सुल्तान अहमद जफर साहिब नाज़िम इरशाद वक्फे जदीद कादियान ने "सदाकत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इनज़ार तथा तब्शीर के हवाले से" शीर्षक पर की। महोदय ने सूर: इनआम की आयत 49- 50 और सूरह: जिन की आयत 27-28 की तिलावत फरमाई जिन में अल्लाह तआला फरमाता है कि अल्लाह तआला की तरफ से आने नबी और मुरसिलों को प्रचुर मात्रा में ऐसी भविष्य की ख़बरें दिए जाने का वर्णन है जिन में तबशीर और इनज़ार की ख़बरें होती हैं और जो लोग इस नबी पर विश्वास करके अपना सुधार कर लेते हैं अल्लाह तआला उनके जीवन को हर तरह के भय से दूर कर के हर ग़म और कष्ट से मुक्ति प्रदान करता है और जो लोग इस नबी पर ईमान नहीं लाते हैं, और उपद्रव में पड़े रहते हैं, उन्हें अपने अज़ाब का मज़ा चखाया जाता है।

आप ने अपनी तक़रीर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कई ईमान वर्धक इनज़ारी और तबशीरी पेशगोइयों का उल्लेख किया। आप ने एक तबशीरी भविष्यवाणी का जिक्र करते हुए कहा कि विनीत एक ऐसी भविष्यवाणी का उल्लेख करेगा जिस का प्रकटन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना से लेकर आज तक बड़ी शान से हो रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने ख़ुशख़बरी सुनाते हुए कहा था कि मैं तेरी तब्लीग़ को पृथ्वी के किनारों तक पहुँचाऊँगा।

यह 1898 ई का इल्हाम है उस समय आप के मानने वालों की संख्या दस हज़ार थी। इन परिस्थितियों में यह एक महान भविष्यवाणी बन जाती है, क्योंकि

पृष्ठ 7 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

आज अल्लाह तआला के फज़्ल से कादियान का जलसा सालाना शुरू हो चुका है। अल्लाह तआला से दुआ करें कि जलसा के तीन दिन वहां ख़ैरियत से गुज़रे और जिस उद्देश्य को ले कर जमाअत के श्रद्धालु इस जलसा में शामिल होने के लिए आए हैं वे इस लक्ष्य को प्राप्त करने वाले हों।

जलसा सालाना में शामिल होने के उच्च लक्ष्यों का वर्णन और उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से जमाअत के लोगों को प्रमुख नसीहतें।

आज दुनिया को मसीह मौऊद के मानने वालों की दुआओं की बहुत ज़रूरत है।

दुआ का विषय ऐसा है कि जिस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न स्थानों पर कई अलग-अलग मज्लिसों में भी उल्लेख किया है और अपनी लेखनी में भी लिखा है। दुआ क्या है? और इस के लिए कैसी अवस्था धारण करनी चाहिए? दुआओं की स्वीकृति किस प्रकार हो सकती है? और दुआ ही सभी समस्याओं का हल है इस संबंध में, जैसा कि मैंने कहा था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा है और हमें इस ओर ध्यान दिलाया है कि दुआओं की ओर विशेष ध्यान दो।

दुआओं की स्वीकृति के लिए यह बहुत ज़रूरी बात है कि सब व्यक्तिगत द्वैषों और नफरतों को भुला दिया जाए और अल्लाह तआला के हुज़ूर गिड़गाड़ाते हुए अपने गुनाहों की माफी मांगी जाए और भविष्य के लिए अपने दिल को साफ रखने के लिए भी अल्लाह तआला से मदद मांगी जाए।

दुआओं के लिए व्याकुलता भी आवश्यक है और फिर इस विश्वास पर स्थापित होना भी ज़रूरी है कि हर तरह की आपात स्थिति में, अल्लाह तआला ही है जो काम करता है। वही है जो दुआओं को सुनता है और अपने बन्दों की मदद करता है।

दुआओं की स्वीकृति के लिए यह भी आवश्यक है कि मनुष्य हर दिन नेकियों में तरक्की करे।

यह एक ऐसा बिन्दु है जो समझने वाला है कि आपने फरमाया कि हमारी दुआएं जब एख बिन्दु पर पहुंच जांए जो अल्लाह तआला चाहता है तो फिर सारे झूठे अपने आप तबाह हो जाते हैं।

अल्लाह तआला उम्मते मुस्लिमा की आंखें खोले और यह अल्लाह तआला के भेजे हुए के विरोद्ध से रुक कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहायक बनने वाले हों। अल्लाह तआला हमें भी दुआओं का हक अदा करने वाल बनाए विशेष रूप से कादियान में जलसा में शामिल होने वाले दुआओं पर बहुत ध्यान दें और इस जलसा में शामिल होने वाले अपने अन्दर एक क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा करने वाले हों। अल्लाह तआला हम सब को इस की तौफीक़ प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 दिसम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आज अल्लाह तआला के फज़्ल से कादियान का जलसा सालाना शुरू हो चुका है। अल्लाह तआला से दुआ करें कि जलसा के तीन दिन वहां ख़ैरियत से गुज़रे और जिस उद्देश्य को ले कर जमाअत के श्रद्धालु इस जलसा में शामिल होने के लिए आए हैं वे इस लक्ष्य को प्राप्त करने वाले हों। और वे उद्देश्य है अल्लाह तआला के समक्ष दुआएं करना और अपनी व्यावहारिक स्थितियों में सुधार करने की कोशिश करना। अल्लाह तआला के साथ अपने संबंधों को मज़बूत करना और इस उद्देश्य के लिए जलसा के कार्यक्रमों में शामिल होना, उन्हें सुनना, उनसे फायदा उठाना, और आध्यात्मिक वातावरण से लाभ उठाना और विशेष प्रवृत्ति के साथ दुआओं पर ध्यान केंद्रित करना। जमाअत के विरोद्धी जो जमाअत को नुकसान पहुचाने के लिए दुनिया के किसी भी हिस्से में योजना बना रहे हैं। उन को तोड़ने के लिए अल्लाह तआला की विशेष मदद, सहायता के लिए दुआएं करना के अल्लाह तआला प्रत्येक बुराई से हमें सुरिक्षत रखे। इसी तरह, मुसलमानों की सामान्य स्थिति और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर कुछ समूहों और सरकारें, जो गिरी हुई हरकतें कर रहे हैं, जो जुल्म कर रही हैं और मुसलमान जिस तरह मुसलमान की गर्दन काट रहा है, जिस तरह से उन को कत्ल कर रहा है उन को तबाह किया जा रहा है उन के लिए दुआ करना भी आज हमारा फर्ज़ है क्योंकि अल्लाह तआला और हमारे आक़ा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर सारे पक्ष अत्याचार कर रहे हैं। और इन ज़ल्मों को कारण ग़ैर मुस्लिम दुनिया में इस्लाम और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर आरोप लगाए जाते हैं और इन बातों से भी हम अहमिदयों के दिल ही ज़ख्मी होते हैं। अत: इस के लिए भी हमें दुआएं करनी चाहिए और विशेष रूप से वे दोस्त जो इन दिनों मसीह मौऊद की बस्ती में जमा हैं उन्हें विशेष रूप से व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से भी अपनी दुआओं में इन सब उद्देश्यों को, इन सब दुआओं को अपने सामने रखना चाहिए। और इस बात को भी सामने रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस उद्देश्य को लेकर भेजे गए थे। इस के लिए भी दुआ करें और वे उद्देश्य मुसलमानों को भी हिदायत और ग़ैर्मुस्लिमों को भी इस्लाम की वास्तविकता से परिचित करना और उन पर इस्लाम की प्राथमिकता प्रमाणित कर के उन्हें इस्लाम की आग़ोश में ले आना, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झण्डे की नीचे ले कर आना, तौहीद पर उन को स्थापित करना है। इस तरह सामान्य रूप से दुनिया की स्थिति के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला सारे इंसानों को अक्ल दे और तबाही के गढ़े में गिरने से बच जाएं। आज दुनिया को मसीह मौऊद के मानने वालों की दुआओं की बहुत ज़रूरत है।

इसलिए, विशेष रूप से कादियान वालों को जो जलसा में शामिल हैं और सामान्य रूप से जमाअत को मैं कहता हूं कि दुआएं करें कि अल्लाह तआला दुनिया को अक़्ल दे। मुसलमान उम्मत को अक्ल दो और ये लोग इस वास्तविकता सा समझ जाएं कि अल्लाह तआला के भेजे हुए को माने बिना न इन का अस्तित्व है न इन की मुक्ति है और नए साम में जब ये प्रवेश करें तो इस बात को समझते हुए दाख़िल हों अल्लाह करे कि उन को अक्ल आ जाए।

दुआ का विषय ऐसा है कि जिस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विभिन्न स्थानों पर कई अलग-अलग मज्लिसों में भी उल्लेख किया है और अपनी लेखनी में भी लिखा है। दुआ क्या है? और इस के लिए कैसी अवस्था धारण करनी चाहिए ? दुआओं की स्वीकृति किस प्रकार हो सकती है? और दुआ ही सभी समस्याओं का हल है इस संबंध में, जैसा कि मैंने कहा था, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े स्पष्ट शब्दों में लिखा है और हम इस ओर ध्यान दिलाया है कि दुआओं की और विशेष ध्यान दो। इस बारे में आप के कुछ उद्धरण मैं प्रस्तुत करूंगा।

दुआओं की स्वीकृति के बुनियादी और सिद्धांत वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:

"जब तक सीना साफ न हो, तब तक दुआ स्वीकार नहीं होती। यदि कोई सांसारिक मामले में किसी व्यक्ति के साथ तेरे सीना में द्वेष है तू तेरी दुआ स्वीकार नहीं हो सकती। फरमाते हैं कि इस बात को अच्छी तरह से याद रखना चाहिए कि और सांसारिक मामलों में कभी किसी के साथ द्वेष नहीं रखना चाहिए। और दुनिया और उस की हस्ती क्या चीज़ है कि इस के लिए तुम किसी से द्वेष रखो।

(मल्फूज़ात जिल्द 9 पृष्ठ 217-218 संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

अत: दुआओं की स्वीकृति के लिए यह बहुत जरूरी बात है कि सभी निजी रंजिशों और द्वैषों को भुला दिया जाए और अल्लाह तआला के सामने गिड़गिड़ाते हुए अपने गुनाहों की क्षमा भी मांगी जाए और हमेशा के लिए अपने दिल को शुद्ध करने के लिए अल्लाह तआला की मदद मांगी जाए। आज जो अहमदियत के विरोधी, अपने विरोधी आक्रामकता में बड़े हुए हैं, अल्लाह तआला के समक्ष हमारी दुआओं के साथ मिलना चाहिए। जब कोई व्यक्ति व्याकुल होकर अल्लाह तआला के आगे झुकता है तो फिर अल्लाह ताला भी इस की मदद को आता है। इसलिए इस मूल को हमेशा सामने रखना चाहिए और कभी भी इस बात से लापरवाह नहीं होना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "कुछ लोग ऐसे होते हैं कि एक कान से सुनते हैं दूसरी तरफ से निकाल देते हैं। इन बातों को दिल में नहीं उतारते। चाहे जितनी नसीहत करो परन्तु इन को प्रभाव नहीं होता। फरमाया कि याद रखो कि ख़ुदा तआला महान और बे नयाज़ है। जब तक बहुत अधिक और बार बार व्याकुलता से दुआ नहीं की जाती तो वह परवाह नहीं करता।" देखो, अगर किसी की पत्नी या बच्चा बीमार हो या अगर कोई व्यक्ति पर गंभीर मुकदमा आ जाए तो इन बातों के लिए उसे कैसे व्याकुलता पैदा होती है? अत: दुआ में भी जब तक सच्ची तड़प और व्याकुलता की परिस्थिति पैदा न हो तब तक वह बिल्कुल निष्प्रभावी और बेहूदा काम है।

"और दुआओं में व्याकुलता पैदा करने की अवस्था पैदा करने की हालत और फिर स्वीकृति के लिए जैसा कि पहले आप ने उसूली बात फरमा दी कि अपने दिलों के मैलों को साफ करो। आप फरमाते हैं "स्वीकृति के लिए व्याकुलता शर्त है।(एक शर्त दिलों को साफ करना। फिर दूसरी बात व्याकुलता है।) जैसा कि फरमाया

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ يَكْشِفُ السُّوْٓءَ

(अन्नमल- 63) ।(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 137. संस्करण 1985 मुद्रित यू के)

अर्थात वह कौन है जो व्याकुल की दुआओं को स्वीकार करता है जब वह उसे पुकारे और परेशानी को दूर कर देता है।

इसलिए, दुआओं के लिए व्याकुलता भी ज़रूरी है और फिर इस विश्वास पर स्थापित होना भी ज़रूरी है कि हर प्रकार की चिंता में, अल्लाह तआला की हस्ती ही वह हस्ती है जो काम आती है। वही है जो दुआओं को सुनता है और अपने बन्दों की मदद करता है। अत: कादियान वालों को मैं संबोधित हूँ कि आजकल जो अहमदी विशेष आध्यात्मिक वातावरण में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बस्ती में रह रहे हैं, वहाँ कुछ दिन गुज़ार रहे हैं जो बाहर से आए हुए हैं वे अपनी दुआ अपने नवाफल में एक ऐसी स्थिति पैदा करने की कोशिश करें जो व्याकुलता की अवस्था है और समान्य रूप से सारी जमाअत को इस ओर ध्यान देना चाहिए और विशेष रूप से वहां के लोगों को चलते फिरते भी इधर उधर की बातों के स्थान पर अधिक समय दुआओं और ज़िक्रे इलाही पर गुज़ारना चाहिए। व्याकुल हो हो कर अल्लाह तआला की तरफ झुकें ताकि अहमिदयों के लिए जहां भी कष्टदायक हालात हैं अल्लाह तआला अपने फज़ल से उन में बेहतरी लाए और दुश्मन को असफल करे।

व्याकुलता की अवस्था और दुआ की वास्तविकता को वर्णन करते हुए एक स्थान पर आप फरमाते हैं कि

यह मत समझो कि दुआ केवल ज़बानी बक बक का नाम है बल्कि दुआ एक प्रकार की मौत है जिस की बाद ज़िन्दगी हासिल होती है जैसा कि पंजाबी में एक शेर है

जो मंगे सो मर रहे मरे सो मंगन जा।

अर्थात मांगने वाले की अवस्था एसा होती है कि जिस तरह मर गया। अपना कुछ नहीं रहता। अपनी हस्ती अपने अहंकार को बिल्कुल समाप्त कर देता है और बिल्कुल अपनी हस्ती को फना करके फिर मांगता है यह अवस्था हो तो जब अल्लाह तआला के समक्ष इंसान हाज़िर होता हो तो दुआएं भी स्वीकार होती हैं।) आप फरमाते हैं कि दुआ में एक चुम्बकीय प्रभाव होता है वह फैज़ और फज़ल को अपनी तरफ खींचती है।

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 62 प्रकाशन 1985 ई मुद्रित यू. के)

फिर दुआ, का महत्व दुआओं और नफल की तरफ ध्यान और ख़ुदा तआला के फज़ल की तरफ ध्यान दिलाते हुए आप फरमाते हैं।

"हम यह कहते हैं कि जो ख़ुदा तआला के समक्ष रोता है उस के आदेशों को सम्मान की नज़र से देखता है।(अदेशों को सम्मान की नज़र से देखना यह भी बड़ी चीज़ है। वे कौन सी सीमाएं हैं जो अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में वर्णन फरमाई हैं, जिन के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें फरमाया और वो सारे आदेश जो कुरआन मजीद में वर्णन हुए हैं उन को सम्मान की नज़र से देखा जाए। किसी को भी मामूली न समझा जाए।) उस की जलाल से भयभीत हो कर अपना सुधार करता है(यह भी विश्वास है कि अल्लाह तआला की नाफरमानी करूंगा तो फिर सज़ावार हो सकता हूं। अत: इस बात को सामने रखते हुए अपना सुधार करता है तो फरमाया कि वह ख़ुदा के फज़ल से ज़रूर हिस्सा लेगा। इस लिए हमारी जमाअत को चाहिए कि वह तहज्जुद की नमाज़ को ज़रूर नियिमत करें। जो अधिक नहीं तो कम से कम दो रकअत ही पढ़ लिया करें क्योंकि इस को दुआ करने का बेहतरीन अवसर मिल जाएगा। फरमाया कि इस समय कि दुआओं में एक विशेष प्रभाव होता है।(अर्थात तहज्जुद के समय की दुआओं में) क्योंकि वह सच्चे जोश से निकलती हैं। जब तक एक विशेष दर्द और वेदना दिल में न हो उस समय तक एक व्यक्ति आराम की नींद से कब जागता है। अत: उस समय का उठना ही एक दिल में दर्द पैदा कर देता है जिस से दुआओं में वेदना और व्याकुलता की स्थिति पैदा हो जाती है और यही व्यकुलता और वेदना दुआ की स्वीकृति का कारण हो जाते हैं।

तहज्जुद की नमाज़ में नफलों में जो व्याकुलता और बैचेनी पैदा हो जाती है और अल्लाह तआला ने फरमाया है कि मैं व्याकुल की दुआ स्वीकार करता हूं। आप फरमाते हैं कि व्याकुलता की हालत उस समय पैदा होती है जब इंसान अपने आराम को कुरबान करे और इबादत के लिए उठे। फरमाया कि परन्तु अगर उठने में सुस्ती और ग़फलत से काम लेता है तो स्पष्ट है कि वह दर्द और वेदना दिल में नहीं। क्योंकि नींद तो ग़म को दूर करती है। परन्तु जब कि नींद से जागता है तो मालूम हुआ कि कोई दर्द और ग़म नींद से भी बढ़ कर है जो जगा रहा है। फरमाते हैं फिर एक और बात भी ज़रूरी है जो हमारी जमाअत को धारण करनी चाहिए और वह है कि ज़बान को फज़ूल बातों सो साफ रखा जाए। (कि फज़ूल बातों के करने से ज़बान को पाक रखो। किसी को भावनात्मक कष्ट न पहुंचाओ। किसी प्रकार की ग़लत बात न करो और विशेश रूप से वहां जलसा के दिनों में तो इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। और अधिक समय ज़िक्रे इलाही में गुज़ारना चाहिए। फरमाया कि ज़बान हस्ती की ड्यूढ़ी है और ज़बान को पाक करने से मानो अल्लाह तआला वजूद की हस्ती मकी ड्यूढी में आ जाता है। (अर्थात जो घर का दरवाज़ा होता है जो मुख्य प्रवेश द्वार है वह ज़बान है। "जब अल्लाह तआला ड्यूढ़ी में आ गया तो फिर अन्दर आने में क्या आश्चर्य है। आप फरमाते हैं कि आप फरमाते हैं कि अल्लाह के हुकूक और अल्लाह के बन्दों के हकूक में जान बूझ कर लापरवाही न बरती जाए।(न अल्लाह के हम अद करने में लापरवाही हो। न बन्दों के हक अदा करने में लापरवाही हो। ये दोनों बातें सामने रखो।) फरमाया कि जो इन बातों को सामने रखते हुए दुआओं से काम लेगा या यूं कहो कि जिसे दुआ की तौफीद दी जाएगी। आप फरमाते हैं कि हम विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला इस पर

अपना फज़ल फरमाएगा और वह बच जाएगा। ज़ाहरी कोशिशें सफाई आदि की मना नहीं हैं। बल्कि

बर तवक्कुल ज़ानुए अशतर वह वनद

(अर्थात भरोसे से पहले ऊंट का घुटना बांधना ज़रूरी है।) आप फरमाते हैं कि इस पर अनुकरण करना चाहिए जैसा कि اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ से पता चलता है परन्तु याद रखना चाहिए कि वास्तविक सफाई वही है जो फरमाता है قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَكّٰهَا..... प्रत्येक आदमी अपनी फर्ज़ समझ ले कि वह अपनी हालत को ठीक करेगा। आप फरमाते हैं परन्तु वही ख़ुदा के फसजल का उम्मीदवार हो सकता है जो दुआ, तौब: और इस्तिग़फार का क्रम न तोड़े और जानबूझ कर गुनाह न करे।

फिर आप फरमाते हैं गुनाह एक ज़हर है जो इंसान को हलाक कर देती है और ख़ुदा के ग़ज़ब को भड़काती है। गुनाह से सिर्फ ख़ुदा तआला का ख़ौफ और उस की मुहब्बत हटाती है। (अल्लाह तआला का ख़ौफ और मुहब्बत हो और यह पता हो कि मुझे हर समय ख़ुदा तआला देख रहा है तो आप फरमाते हैं कि तभी इंसान गुनाह से बच सकता है।) आप फरमाते हैं कि दुआ के क्रम को न तोड़ो और तौब: और इस्तिग़फार से काम लो। वही दुआ लाभदायक हो सकती है जब कि दिल ख़ुदा तआला के आगे पिघल जाए। और ख़ुदा के अतिरिक्त कोई भागने का स्थान नज़र न आए। जो ख़ुदा की तरफ भागता है और व्याकुलता के साथ अमन का इच्छुक होता है वे अन्त में बच जाता है।

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 245 से 247 प्रकाशन 1985ई यू. के)

फिर यह बताते हुए कि वास्तविक दुआ क्या होती है आप फरमाते हैं कि

दुआ दो किस्म(की) है एक तो साधारण रूप से। अर्थात् साधारण दुआ इंसान करता है और) दूसरी वह दुआ जब इंसान इसे चरम तक पंहुचा देता है अत: यही दुआ वास्तविक अर्थों में दुआ कहलाती है) कि इंसान दुआ को चरन तक पहुंचा दे एक व्याकुलता की स्थिति पैदा हो जाए) आप फरमाते हैं इंसान को चाहिए कि किसी मुश्किल में पड़े बिना भी दुआ करता रहे। (यह नही कि तब कोई मुश्किल आई है तो दुआ करनी है। कोई मुश्किल न भी पड़े तब भी दुआ करते रहना चाहिए।) क्योंकि इसे क्या पता ख़ुदा तआला के क्या इरादे हैं और कल क्या होने वाला है अत: पहले से दुआ करो ताकि बचाया जाए। आप फरमाते हैं कई बार बला इस तरीके से आ जाती है कि इंसान को दुआ का अवसर नहीं मिलता। अत: अगर पहले दुआ कर रखी होगी तो बुरे समय में काम आती है।

(मल्फूज़ात भाग 10 पेज 122-123 संस्करण 1 9 85, इंग्लैंड)

फिर, यह वर्णन करते हुए कि कुरआन शरीफ की शुरुआत भी जो इस का आरम्भ भी दुआ से हुआ है और इस का अन्त भी दुआ पर है। आप फरमाते हैं कि

"याद रखो, यह जो अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ की शुरुआत भी दुआ से की है और इस के समाप्त को भी दुआ से किया है और साथ ही दुआ की है, और फिर यह दुआ के अंत में भी किया जाता है।" (सूरत फातिहा भी दुआ है और सूरत नास भी दुआ है) "तो इसका यह मतलब है कि मनुष्य ऐसा कमज़ोर है कि वह ख़ुदा तआला की कृपा के बिना और ख़ुदा तआला की सहायता के बिना पवित्र नहीं हो सकता है, और जब तक ख़ुदा तआला से मदद और सहायता न मिले यह नेकी में तरक्की नही कर सकता।

एक हदीस में आया है सब मुर्दे हैं परन्तु जिस को ख़ुदा ज़िन्दा करे सब अन्धे हैं जिस को ख़ुदा आखें दे। अत: यह सच्ची बात है कि तब तक ख़ुदा तआला का फैज़ प्राप्त नही होता तब तक दुनिया की मुहब्बत का बोझ गले में रहता है और वही इस से छुटकारा पाते हैं जिन पर ख़ुदा तआला अपना फज़ल करता है। परन्तु याद रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला के फैज़ भी दुआ से ही शुरू होता है।

(मल्फूज़ात खंड 10 पृष्ठ 62 संस्करण 1 9 85 यू. के)

इसके लिए भी दुआ करनी पड़ेगी।

फिर मोमिनों की विशेषताओं को बयान फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि

" कुरआन शरीफ में तो साफ तौर पर लिखा है

قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ صَلٰوتِهِمۡ خَاشِعُوۡنَ

(अल-मौमेनून 2: 3.)। अर्थात जब दुआ करते करते इंसान का दिल पिघल जाएगा और अल्लाह तआला के दरबार पर ऐसी ईमानदारी और श्रद्धा से गिर जाए कि बस इसी में खो जाए और सभी विचारों को मिटा कर उसी से फ़ैज़ और सहायता मांगे और ऐसी एकाग्रता मिल जाए कि एक प्रकार का रोना और वेदना प्राप्त हो जाए"तब कल्याण का दरवाजा खुलता है (यह भी व्याकुलता की स्थिति पैदा हो जाए। वेदना पैदा हे जाए। इंसान रोए दिल में एक नर्मी पैदा हो जाए।) फरमाया कि "तब कल्याण का दरवाजा खुलता है"। (यह फरमाया कि ..... वह मोमिन कल्याण पा जाते हैं जो अपनी दुआओं में वेदना दिखाते हैं। और बहुत विनम्रता और विनय से गिरते हैं। उन पर व्याकुलता की स्थिति छा जाता है) फरमाया कि " तब कल्याण का दरवाज़ा खुल जाता जिस से दुनिया की मुहब्बत शांत हो जाती है क्योंकि दो प्यार एक स्थान पर जमा नहीं हो सकते। जैसा कि लिखा है।

हम ख़ुदा ख़वाही व हम दुनयाए जूं
ईं ख़्याल अस्त व महाल अस्त व जनूं।

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 63 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

कि तू ख़ुदा को भी चाहता है और इस दुनिया, ज़लील दुनिया को भी चाहता है, यह असंभव है और यह पागलपन है दोनों चीज़ें नहीं हो सकतीं हां, ख़ुदा को चाहो तो दुनिया ज़रूर मिल जाती है लेकिन केवल दुनिया को चाहने से ख़ुदा नहीं मिलता ।

अपने इरादों और इच्छाओं को अल्लाह तआला की इच्छा के अधीन करने से दुआओं की स्वीकृति होती है इस बिन्दु को वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं कि

"अल्लाह तआला में फना हो जाना और अपने सब इरादे को थोड़ कर केवल अल्लाह के इरादों और आदेशों का पाबन्द हो जाना चाहिए अपने लिए भी और अपनी औलाद बीवी बच्चों और हमारे लिए भी रहमत का कारण बन जाओ। " यानी हज़रत मसीह मौऊद अपने आप के लिए भी कह रहे हैं कि हमारे लिए भी रहमत का कारण बन जाओ। यह कैसे बनोगे कि अल्लाह तआाल की तरफ आकर सारी इच्छाओं को छोड़ दो आप फरमाते हैं कि विरोधियों के लिए आरोप का अवसर हरिगज़ हरिगज़ नहीं देना चाहिए।" अल्लाह तआला फरमाता है कि,

مِنۡهُمۡ ظَالِمٌ لِّنَفۡسِهٖ وَ مِنۡهُمۡ مُّقۡتَصِدٌ وَ مِنۡهُمۡ سَابِقٌۢ بِالۡخَيۡرٰتِ

(फातिर 33)" (इसका मतलब यह है कि कुछ ऐसे जो अपने नफस के मामले में ज़ालिम हैं और ऐसे भी हैं मध्यवर्ती हैं और इन में से ऐसे भी है जो नेकियों में आगे बढ़ने वाले हैं) हुज़ूर फरमाते हैं कि पहली दोनों हालतें नीची हैं नेकियों में आगे बढ़ने वाला होना चाहिए। एक ही स्थान पर ठहर जाना कोई अच्छा गुण नहीं । देखो छहरा हुआ पानी आख़िर गन्दा हो जाता है कीचड़ की संगत के कारण बदबू वाला और बुरे स्वाद वाला हो जाता है। चलता पानी हमेशा अच्छा स्वाद वाला और मज़ेदार होता है। यद्यपि इस में भी नीचे कीचड़ हो मगर कीचड़ इस पर कोई प्रभाव नहीं करता। यही अवस्था इंसान की है कि एक ही हालत में ठहर नहीं जाना चाहिए। यह हालत ख़तरनाक है। प्रत्येक समय कदम आगे ही रखना चाहिए। नेकी में तरक्की करनी चाहिए वरना ख़ुदा तआला इंसान की मदद नहीं करता और इस तरह से इंसाम बेनूर हो जाता है जिस का परिणाम अन्त में कई बार धर्म से निमुख हो जाना होता है इस तरह से इंसान दिल का अन्धा हो जाता है।

फिर दुआओं की स्वीकृति के लिए यह भी ज़रूरी है कि इंसान प्रत्येक दिन नेकियों में तरक्की करता रहे। जैसा कि पहले भी बताया है। आप ने फमराया कि एक स्थान पर खड़े नहीं होना चाहिए बल्कि चलते पानी की तरह प्रत्येक दिन इंसान को आगे बढ़ते रहना चाहिए। आप और फरमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला की सहायता सैदव उन लोगों के साथ होती है, जो हमेशा नेकी में आगे ही आगे कदम रखते हैं। एक जगह पर नहीं ठहर जाते और वही हैं जिन का अन्त अच्छा होता है कुछ लोगों को हम ने देखा है कि बहुत शौक और रोने में अधिकता होती है, लेकिन आगे जा कर ठहर जाती है और अन्त में उन को अन्जाम अच्छा नहीं होता। " आप फरमाते हैं, "अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में यह दुआ सिखाई है اَصۡلِحۡ لِىۡ فِىۡ ذُرِّيَّتِىۡ (अल-अहक़ाफ़ 16)। मेरी पत्नी तथा बच्चों का भी सुधार कर। अपनी अवस्था का पवित्र परिवर्तन और दुआओं के साथ साथ अपनी औलाद और बीवी के लिए दुआ करते रहना चाहिए क्योंकि अक्सर फित्ने औलाद के कारण इंसान पर पड़ते हैं और अक्सर बीवी के कारण "(औलाद के कारण भी और पत्नी के कारण भी।) फरमाया कि, "देखो पहला फित्ना आदम अलैहिस्सलाम पर औरत के कारण से ही आया हज़रत मूसा के मुकाबला में बलअम का ईमान जो नष्ट किया गया इस का कारण भी तौरात से ज्ञात होता है कि बलअम की औरत को बादशाह ने कुछ ज़ेवर दिखा कर कुछ लालच दे दिया था फिर औरत ने बलअम को हज़रत मूसा पर कुछ लअनत करने के लिए उकसाया था। "आप फरमाते हैं, "अत: इन के कारण प्राय कष्ट और मुसीबतें आ जाती हैं।" (अर्थात बच्चों और पत्नियों की वजह से) फरमाया कि "तो उन के सुधार की तरफ भी पूरा ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए और उनके लिए भी दुआएं करनी चाहिए।"

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 138-139 संस्करण 1985 मुद्रित यू के)

अत: केवल दुआओं की ओर ध्यान देने और नेकियों में बढ़ने के लिए एक मोमिन को अपनी हस्ती तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि अगली नस्ल में भी नेकियों को अपनाने की जहां कोशिश करनी चाहिए उन्हें ध्यान दिलाना चाहिए वहां उन के लिए दुआ भी करने की ज़रूरत है ताकि उन में भी नेकियों की रूह आगे बढ़ते चले जाने की रूह पैदा हो।

एक जगह आप फरमाते हैं:

"एक व्यक्ति जो अल्लाह तआला के औलिया में से था, उन का वर्णन है कि वह एक जहाज़ पर सवारी कर रहा था। समुद्र में तूफान आया। करीब था कि जहाज़ डूब जाता उस की दुआ से बचा लिया गया था। "(अर्थात, उस बुज़ुर्ग के कारण)" और दुआ के समय उस को इल्हाम हुआ कि तेरे कारण हम ने सब को बचा लिया फरमाया कि " लेकिन ये बातें मौखिक बातों से नही होतीं। इन के लिए तो बड़ी मेहनत करनी पड़ती है आप फरमाते हैं कि हमारी तरफ से तो यही नसीहत है कि अपने आप को अच्छा और नेक नमूना बनाने की कोशिश में लगे रहो। जब तक फरिश्तों जैसा जीवन न बन जाए जैसे कहा जा सकता है कि कोई पवित्र हो गया। يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 138 संस्करण 1985 मुद्रित यू के)

अर्थात वही करते हैं जो आदेश दिए जाते हैं अर्थात अपनी व्यवहारिक हालतों को एसे बनाओ जैसे तुम्हें आदेश दिया जाता है। आप दुआ का महत्तव बताते हुए फरमाते हैं कि

मुबारक वह कैदी जो दुआ करते हैं थकते नहीं। क्योंकि एक दिन रिहाई पाऐंगे। मुबारक वह अन्धे जो दुआओं में सुस्त नहीं होते क्योंकि एक दिन देखने लगेंगे। मुबारक वह कैदी जो कब्रों में पड़े हुए दुआओं के साथ ख़ुदा तआला की मदद चाहते हैं क्योंकि एक दिन कब्रों से निकाले जाऐंगे।

फिर आप हमें ध्यान दिलाते हुए फरमाते हैं कि

मुबारक तुम जब कि दुआएं करने में थकते नहीं। (कभी थकते नहीं कभी सुस्त नहीं होते।) और तुम्हारी रूह दुआ के लिए पिघलती है और तुम्हारी आंख आंसू बहाती और तुम्हारी सीने में एक आग पैदा कर देती है। और तुम्हें एकान्त का आन्नद उठाने के लिए अन्धेरी कोठरियों और सुनसान जंगलों में ले जाती है। और तुम्हें व्याकुल और दीवाना और बेचैन बना देती है क्योंकि आख़िर तुम पर फज़ल किया जाएगा।(यह हालात एक जैसे नहीं रहने। इन दुआओं से अल्लाह तआला का फज़ल इन्शा अल्लाह आएगा।) वह ख़ुदा जिस की तरफ हम बुलाते हैं बहुत अधिक रहम करने वाला, दयालु, शर्म करने वाला कमज़ोरों पर रहम करने वाला है। अत: तुम वफादार बन जाओ और पूरी सच्चाई से दुआ करो कि तुम पर रहम करे। दुनिया के झमेलों से अलग हो जाओ और नफसानी झगड़ों को धर्म का रंग न दो।

ख़ुदा के लिए हार धारण करो हैं और हार को स्वीकार कर लो और महान जीत के उत्तराधिकारी बन जाओ। दुआ करने वालों को ख़ुदा तआला ख़ुदा चमत्कार दिखाएगा, और मांगने वालों को एक आदत से हट कर नेअमत दी जाएगी। दुआ ख़ुदा से आती है और ख़ुदा की तरफ ही जाती है। दुआ से ख़ुदा ऐसा नज़दीक हो जाता है जैसा कि तुम्हारी जान तुम से अधिक नज़दीक है। दुआ की पहली नेअमत यह है कि मनुष्य में शुद्ध परिवर्तन पैदा होता है फिर इस परिवर्तन से ख़ुदा तआला भी अपनी विशेषताओं में परिवर्तन करता है और उसके गुण अपिरवर्तन शील हैं लेकिन परिवर्तन पैदा करने वाले के लिए एक अलग तजल्ली है। " (ख़ुदा तआला की विशेषताओं में परिवर्तन नहीं होता बल्कि उनकी जो अभिव्यक्ति है वह जब इंसान अपने अन्दर पैदा करता है तो बदल जाती है।) "जिस को दुनिया नहीं जानती" फरमाया कि मानो वह ख़ुदा है हालांकि और कोई ख़ुदा नहीं परन्तु नई तजल्ली नए रंग में उस को प्रकट करती है। तब इस खास तजल्ली की शान में इस तब्दीली वाले केलिए वह काम करता है जो दूसरों के लिए नहीं करता। यही वो चमत्कार हैं।

(लेक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 222-223)

जमाअत के लोगों को, दुआओं और नेक कामों की ओर ध्यान दिलाते हुए और इसी तरह अपने नेक नमूने दिखाने की तरफ ध्यान दिलाते हुए आपने फरमाया कि " हमारी जमाअत के लोगों को नमूना दिखाना चाहिए। अगर किसी का जीवन बैअत के बाद भी इसी तरह की नापाक और गंदा रहता है जैसा कि बैअत से पहले थी और जो व्यक्ति हमारी जमाअत में होकर बुरा नमूना दिखाता है और व्यावहारिक या आस्था के रूप में कमज़ोरी दिखाता है तो वह ज़ालिम है क्योंकि वे सभी जमाअत को बदनाम करता है और हमें भी आरोप का निशाना बनाता है बुरे नमूनों से दूसरों को नफरत होती है और अच्छे नमूने से लोगों को सुविधा महसूस होती है। " आप फरमाते हैं, "मनुष्य का आज और कल बराबर नहीं होना चाहिए।" (ये उदाहरण पहले से आ चुकी हैं)। " जिस का आज और कल इस लिहाज़ से कि नेकी में क्या तरक्की की है बराबर हो गया वे घाटे में है । इंसान अगर ख़ुदा को मानने वाले और उसी पर पूर्ण विश्वास रखने वाला हो तो कभी नष्ट नहीं किया जाता बल्कि इस के लिए लाखों जानें बचाई जाती हैं।

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पेज 137-138 संस्करण 1 9 85, इंग्लैंड)

जैसा कि उदाहरण भी दिया कि एक अल्लाह के वली जहाज़ पर थे तो उन के लिए दूसरे बचाए गए। अल्लाह तआला अपने बन्दों का इतना सम्मान रखता है।

आप फरमाते हैं कि हमारा हथियार तो दुआ है। इस लिए दुआओं की तरफ ही ध्यान देना चाहिए। मसीह मौऊद के बारे में यह कहीं नहीं लिखा कि वह तलवार पकड़ेगा और न यह लिखा है कि वह जंग करेगा बल्कि यही लिखा है कि मसीह कि दम से काफिर मरेंगे अर्थात वह अपनी दुआ के माध्यम से सारे काम करेगा। और फरमाया कि ये सब उद्देश्य जो हम प्राप्त करना चाहते हैं केवल दुआ के माध्यम से ही प्राप्त हो सकेंगे। दुआ में बड़ी शक्तियां हैं। फिर आप फरमाते हैं कहते हैं कि एक बादशाह एक बार किसी देश में हमला करने गया । रास्ते में अक फकीर ने इस के घोड़े की लगाम पकड़ ली। (यह कहावत बनी हुई है) और कहा कि तुम आगे मत बढ़े वरना मैं तुम्हारे साथ लड़ाई करूंगा। बदशाह हैरान हुआ और उस से पूछा कि तू असहाय सामान के बिना फकीर है तू किस प्रकार मेरे साथ लड़ाई करेगा। फकीर ने जवाब दिया कि मैं सुबह की दुआओं के साथ तुम्हारे मुकाबला में जंग करूंगा।(अर्थात तहज्जुद की नमाज़ों से , दुआओं से) बदशाह ने कहा मैं इस का मुकाबला नहीं कर सकत। यह कह कर वापस चला गया। तो इतनी ताकत है दुआओं की। इस बात को आप वर्णन फरमा रहे हैं।) फरमाया कि अत: दुआ में ख़ुदा तआला ने बड़ी शक्तियां रखी हैं। ख़ुदा तआला ने मुझे बार बार इल्हाम के माध्यम से बताया है कि कि जो कुछ होगा दुआ के माध्यम से ही होगा। हमारा हथियार तो दुआ ही है इस के सिवाय और कोई हथियार हमारे पास नहीं हैं। जो कुछ हम छुपा हुआ मांगते हैं ख़ुदा तआला उस को ज़ाहिर कर के दिखा देता है। पिछले नबियों के ज़माने में कुछ विरोधियों को नबियों के माध्यम से ही सज़ा दी जाती थी(अर्थात जंगों के रूप में दी गई थी।) परन्तु ख़ुदा जानता है कि हम असहाय और कमज़ोर हैं इसलिए उस ने हमारे सब काम अपने हाथ में ले लिया है। इस्लाम के लिए अब यही एक रास्ता है जिस को ज़हरी मुल्ला और ज़ाहरी फलसफी नहीं समझ सकता। अगर हमारे लिए लड़ाई की राह खुली होती तो इस के लिए सारे सामान भी उपलब्ध किए जाते। जब हमारी दुआंए एक बिन्दु पर पहुंच जांएगी तो झूठे अपने आप तबाह हो जाएंगे।

(अत: यह एक बिन्दु है जो समझने वाला है जो आप ने हमारी दुआएं एक बिन्दु पर पहुंच जाएंगी इस स्तर पर पहुंच जाएंगी जो अल्लाह तआला चाहता है तो फिर सारे छोटे अपने आप तबाह हो जाएंगे। आप के ज़माने में जितने विरोधी थे वे आप से सामने अपमानित तथा लज्जित हुए और आज भी अगर दुश्मन पर विजय प्राप्त करनी है तो उन दुआओं के माध्यम से ही की जा सकती है इस के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए।)

आप फरमाते हैं कि हमारे लिए दुआ से बढ़ कर कोई तेज़ हथियार ही नहीं। सईद वही है जो इस बात को समझे कि ख़ुदा तआला अब धर्म को किस मार्ग पर तरक्की देना चाहता है।

(मल्फूज़ात जिल्द 9 पृष्ठ 27-28 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

अत: अल्लाह तआला ने धर्म की तरक्की का जो हथियार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दिया है वही आप के मानने वालों को भी उपयोग करना होगा। यह हथियार है जो हमें परेशानी से बाहर लाएगा, और बाकी दुश्मन को भी नष्ट कर देगा। इसलिए, प्रत्येक अहमदी को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

अंत में, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ है जो आप ने

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

उम्मते मुस्लिमा के लिए भी की है उन के लिए भी सामान्य रूप से दुआ है। आप फरमाते हैं कि

رَبِّ یَارَبِّ اِسْمَعْ دُعَاءِیْ فِیْ قَوْمِیْ وَتَضَرُّعِیْ فِیْ اِخْوَتِیْ اِنِّیْ اَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّکَ خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ وَشَفِیْعٍ وَ مُشَفَّعٍ لِلْمُذْنِبِیْنَ رَبِّ اَخْرِجْھُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلٰی نُوْرِکَ وَمِنْ بَیْدَاءِ الْبُعْدِ اِلٰی حُضُوْرِکَ رَبِّ ارْحَمْ عَلَی الَّذِیْنَ یَلْعَنُوْنَ عَلَیَّ وَاحْفَظْ مِنْ تَبِّکَ قَوْمًا یَقْطَعُوْنَ یَدَیَّ وَاَدْخِلْ ھُدٰکَ فِیْ جِذْرِ قُلُوْبِھِمْ وَاعْفُ عَنْ خَطِیْئَاتِھِمْ وَ ذُنُوْبِھِمْ وَاغْفِرْلَھُمْ وَعَافِھِمْ وَوَادِعْھُمْ وَصَافِھِمْ وَاَعْطِھِمْ عُیُوْنًا یُبْصِرُوْنَ بِھَا وَاٰذَانًا یَسْمَعُوْنَ بِھَا وَقُلُوْبًا یَفْقَھُوْنَ بِھَا وَاَنْوَارًا یَّعْرِفُوْنَ بِھَا وَارْحَمْ عَلَیْھِمْ وَاعْفُ عَمَّا یَقُوْلُوْنَ فَاِنَّھُمْ قَوْمٌ لَا یَعْلَمُوْنَ رَبِّ بِوَجْهِ الْمُصْطَفٰی وَدَرَجَتِهِ الْعُلْیَا وَالْقَاءِمِیْنَ فِیْ اٰنَاءِ اللَّیْلِ وَالْغَازِیْنَ فِیْ ضَوْءِ الضُّحٰی وَ رِکَابٍ لَکَ تُعَدُّ لِلسُّرٰی وَرِحَالٍ تُشَدُّ اِلٰی اُمِّ الْقُرٰی اَصْلِحْ بَیْنَنَا وَ بَیْنَ اِخْوَانِنَا وَافْتَحْ اَبْصَارَھُمْ وَنَوِّرْ قُلُوْبَھُمْ وَفَھِّمْھُمْ مَا فَھَّمْتَنِیْ وَعَلِّمْھُمْ طُرُقَ التَّقْوٰی وَاعْفُ عَمَّا مَضٰی وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ الْعُلٰی

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 5 पेज 22-23)

कि हे मेरे ख़ुदा! मेरी क़ौम के बारे में मेरी दुआ सुन और मेरे भाइयों और बहनों के बारे में मेरा रोना सुन। मैं तेरे नबी ख़ातमुन्नबियय्यीन और गुनाहगारों के शफीई जिस की शफाअत स्वीकार की जाएगी कि वास्ते से तुझ से निवेदन करता हूं। हे मेरे रब्ब इन्हें ज़ुलमात से अपने नूर की तरफ निकला और दूरी के जंगल से अपने पास ला। हे मेरे रब्ब इन पर रहम कर जो मुझ पर लअनत करते हैं और जो मेरे हाथ काटते हैं इस क़ौम को हलाक़त से बचा और अपनी हिदायत को इन के दिलों में दाख़िल करा और इन के गुनाहों से माफी फरमा और उन को क्षमा कर दे और उन को सुरक्षा प्रदान कर और उन का सुधार कर और उन्हें पवित्र कर। उन को ऐसी आखें प्रदान कर जिन से वह मुझे देख सकें। ऐसे कान प्रदान कर जिन से वे मुझे सुन सकें। और ऐसे नूर प्रदान कर जिन से वे मुझे समझ सकें। और उन पर रहम फरमा और जो कुछ वे कहते हैं उन से क्षमा कर। क्योंकि वे ऐसी कौम है जो जानते नही है। हे मेरे रब्ब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के उच्च स्थान के सदके और उन के सदके जो रातों को उठना करते और सुबह के समय जंग करते हैं और उन सवारियों के सदके जो तेरे (इच्छा की) लिए रातों को सफर करने के लिए तैय्यार की जाती हैं और उन सफरो के सदके तो सारी बस्तियों की मां की तरफ अर्थात मक्का की तरफ किए जाते हैं। हमारे और हमारे भाइयों के मध्य में सुलह फरमा। और उन की आंखें खोल और उन के दिलों को प्रकाशित फरमा। और उन्हें वे कुछ समझा दे जो तूने मुझे समझाया और उन को तक्वा के सरीके सिका और जो गुज़र चुका उस से माफी फरमा। हमारी आख़िर दुआ यही है कि सारी प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं जो बुलंद आसमानों का रब्ब है।

अल्लाह तआला उम्मते मुस्लिमा की आंखें खोले है और यह अल्लाह तआला के भेजे हुए की मुख़ालफत से रुक कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सहायक और समर्थक बनने वाले हों। अल्लाह तआला हमें भी दुआओं का हक अदा करने वाला बनाए। विशेष रूप से कादियान में जलसा में शामिल होने वाले दुआओं पर बहुत अधिक ध्यान दें और अपने जलसा में शामिल होने को अपने अन्दर क्रांतिकारी परिवर्तन करने वाला बनाएं। अल्लाह तआला हम सब को इस की तौफीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

आज ख़ुदा तआला के फज़ल से जमाअत अहमदिया दुनिया के 210 देशों में फैल चुकी है और जमाअत की संख्या हज़ारों से निकल कर लाखों नहीं बल्कि करोड़ो तक पहुंच गई है।

अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार कि "मैं तेरे प्रचार को पृथ्वी के किनारों तक पहुँचाऊँगा।" जमाअत के लिए प्रचार के कई माध्यम प्रदान फरमाए। जैसे आज कल अहमदिया ख़िलाफत के अन्तर्गत अहमदियत यानी सच्चे इस्लाम के प्रसार को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने लिए दुनिया भर में हज़ारों तबलीग़ के सेन्टरों का गठन हो चुका है। हज़ारों वाकफीन ज़िन्दगी मुबल्लिग़ और मुअल्लिम किराम प्रचार-प्रसार के काम में रात दिन व्यस्त हैं। दनिया के कई देशों में विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित साहित्य के लिये आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस स्थापित हैं । अब तक 75 भाषाओं कुरआन मजीद के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं और सब से बढ़ कर मुस्लिम टेलीविजन अन्तर्राष्ट्रीय की स्थापना है जिस के तीन चैनल सारी दुनिया में 24 घंटे यह प्रचार कर रहे हैं कि

इस्मओ सौअतस्समा जा अल मसीह जा अल मसीह
नीज़ बिश्नो अज़ ज़र्मी आमद इमामे दो जहां।

इस के बाद दो राजनीतिक नेताओं ने संक्षेप में संबोधित किया, और किर्गिस्तान के एक अहमदी मित्र ने बहुत ईमान वर्धक वर्णन किया।

(1) अविनाश राय खन्ना (पूर्व सदस्य संसद)

भारतीय जनता पार्टी भारत के उप अध्यक्ष और पूर्व सांसद अविनाश राय खन्ना साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे जमाअत अहमदिया के आध्यात्मिक ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब से एक बार लंदन में मिलने का मौका मिला उन के साथ चाय पीने का मौका मिला। जमाअत अहमदिया का होशियार पुर के शहर के साथ गहरा संबंध है, जहां से मैं हूं। हुज़ूर यहां भी पधारे थे। मुझे गर्व है कि मैंने हुज़ूर को निकट से देखा और उनसे मुलाकात की । 2018 ई शुरू होने वाला है मैं अपनी और अपनी पार्टी की ओर तथा पूरे भारत की तरफ से आप को उसकी बधाई देता हूँ और अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि जो शांति और प्रमे के मिशन को हुज़ूर लेकर चले हैं वर्ष 2018 ई में इसे और अधिक मज़बूती मिले और पूरी दुनिया मैं शांति हो। जमाअत 210 देशों में स्थापित हो चुकी है और जिस देश में भी जमाअत के लोग रहते हैं उस देश के विकास और शांति और सद्भाव के लिए काम करते हैं। इस के लिए मैं भी आप सब को बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं।

(2) सिख पाल सिंह खैरा (विपक्षी नेता उप-विधानसभा पंजाब)

आज हम सब जमाअत अहमदिया के 123वें जलसा में शामिल हुए हैं। मुझे गर्व है कि यह जमाअत जो इतने बड़े मंच से भाईचारा और शांति का संदेश देती है, मुझे इस मंच पर खड़े होकर कुछ शब्द कहने का मौका मिला है। पंजाब की धरती से जमाअत अहमदिया के संस्थापक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने मुहब्बत और प्रेम का संदेश फैलाया। मैं लंदन में मौजूदा जमाअत के ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को बधाई देता हूं कि आप की जमाअत दुनिया में 210 देशों में फैल चुकी है और दुनिया में शांति और प्रेम का संदेश दे रही है। हम पहले मानव हैं, फिर हिंदू या सिख हैं या मुसलमान हैं। दुनिया के दूर दराज़ से जो मेहमान यहां आए हैं मैं उन का स्वागत करता हूं ।

(3) आरतुर अज़गैन बायो साहिब आफ किर्गीज़स्तान

आरतुर अज़गैन बायो साहिब आफ किर्गीज़स्तान ने अपने विचार रखे जिसका अनुवाद ताहिर अहमद तारिक साहिब उप नाज़िर इस्लाहो इर्शात मर्किज़या ने उर्दू में लोगों को सुनाया। आप ने कहा मैं अपनी और जमाअत अहमदिया किर्गीज़स्तान की तरफ से आप सभी को अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह का तोहफा पेश करता हूं। विनीत को सुन 2009 ई में जमाअत अहमदिया में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। ख़ाकसार बहुत ख़ुशनसीब है कि अल्लाह तआला ने इस विनीत को समय के इमाम और अहमदियत यानी वास्तविक इस्लाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। इस साल जमाअत अहमदिया किर्गीज़स्तान से छह लोगों को जलसा सालाना कादियान में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली है। पिछले सात वर्षों से जमाअत किर्गीज़स्तान के लोग जलसा सालाना कादियान में शामिल

शेष पृष्ठ 16 पर

ख़ुत्बः जुमअः

कुरआन करीम में माली कुर्बानियों की तरफ ध्यान दिलाने का वर्णन कई स्थान पर मिलता है। एक जगह पर अल्लाह तआला ने फरमाया जो भी तुम माल में से कुछ खर्च करो वे तुम्हारे अपने लाभ के लिए ही है और साथ ही मोमिनों की यह निशानी वर्णन कर दी कि वे अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही खर्च करते हैं। अतः क्या ही भाग्यशाली हैं वे लोग जो अल्लाह तआला के मार्ग में अपनी संपत्ति खर्च करते हैं, और आज अल्लाह तआला के फज़्ल से सारी धरती पर अहमदियों के अतिरिक्त कोई नहीं जो अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए माली कुरबानी करने की सोच रखता है। शायद कुछ लोग और भी हों दुनिया में जो अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए खर्च करते हैं या अपनी ताकत के अनुसार खर्च करते हैं परन्तु एक जमाअत के रूप में केवल जमाअत अहमदिया ही है जो अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों की मदद के अतिरिक्त धर्म के प्रचार और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर को दिखाने के लिए अपने ऊपर बोझ डाल कर कुरबानी करने वाले होते हैं।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम और इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सहाबा किराम की कुरबानियों का ईमान वर्धक वर्णन।

यह जो सिलसिला कुरबानियों का है यह ख़ुदा तआला के आदेश के अनुसार है और अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार आज भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में नज़र आता है। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की जमाअत को इस कुरबानी की वह समझ प्रदान की है जो जैसा कि मैं ने कहा दुनिया ने किसी और को नहीं। और इस के असंख्य नमूने हर साल हम देखते हैं। आज चूंकि रिवायत के अनुसार जनवरी के पहले ख़ुत्बा में वक्फे जदीद के नए साल का एलान होता है इस लिए अस लिहाज़ से मैं वक्फे जदीद की माली कुरबानी करने वालों के कुछ ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन करूंगा।

वक्फे जदीद की माली कुरबानियों में हिस्सा लेने वाले आदमियों का ईमान वर्धक वर्णन। जमाअत के लोगों का माली कुरबानी के लिए ज़ौक तथा शौक, चन्दा की बरकत से उन की मुशकिलों के दूर होने, माली सुविधा और दिल की शान्ति प्रदान होने और उन के मालों और नफसों में बरकत की ईमान वर्धक घटनाऐं।

वक्फे जदीद के (61) वित्तीय वर्ष के शुरुआत की घोषणा

पिछले साल (2017 में)विश्वव्यापि जमाअत अहमदिया ने वक्फ जदीद में 88 मिलियन कुरबानी पेश की।

संयुक्त रूप से पाकिस्तान प्रथन नम्बर पर, ब्रिटेन दूसरे स्थान पर, और जर्मनी तीसरे स्थान पर रहा। पिछले साल 16 लाख से अधिक वक्फ जदीद के वित्तीय वर्ष में शामिल थे, नए शामिल होने वालों की संख्या में 2 लाख 68 हज़ार की वृद्धि हुई।

विभिन्न पहलुओं के चन्दा वक्फे जदीद में महत्त्वपूर्ण बलिदान करने वाले देशों और जमाअतों की समीक्षा।
अल्लाह तआला सभी कुरबानी करने वालों के मालों तथा नफसों में अत्यधिक बरकत डाले। उन के ईमान तथा श्रद्धा में वृद्धि करे और प्रत्येक अपने कथन तथा कर्म में अल्लाह तआला की प्रसन्नता के अनुसार हो।

आदरणीय अली गोहर मुनव्वर साहिब पुत्र मुनव्वर साहिब की एक कार दुर्घटना में वफात, मरहूमका नमाज़ जनाज़ा गायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 जनवरी 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

कुरआन करीम में माली कुर्बानियों की तरफ ध्यान दिलाने का वर्णन कई स्थान पर मिलता है। एक जगह पर अल्लाह तआला ने फरमाया

وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ (273 अलबकर:)

जो भी तुम माल में से कुछ खर्च करो वे तुम्हारे अपने लाभ के लिए ही है और साथ ही मोमिनों की यह निशानी वर्णन कर दी कि वे अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही खर्च करते हैं। फरमाता है

وَ مَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ (273 अलबकर:)

अत: क्या ही भाग्यशाली हैं वे लोग जो अल्लाह तआला के मार्ग में अपनी संपत्ति खर्च करते हैं, और आज अल्लाह तआला के फज़्ल से सारी धरती पर अहमदियों के अतिरिक्त कोई नहीं जो अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए माली कुरबानी करने की सोच रखता है। शायद कुछ लोग और भी हों दुनिया में जो अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए खर्च करते हैं या अपनी ताकत के अनुसार खर्च करते हैं परन्तु एक जमाअत के रूप में केवल जमाअत अहमदिया ही है जो अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों की मदद के अतिरिक्त धर्म के प्रचार और इस्लाम की वास्तविक तस्वीर को दिखाने के लिए अपने ऊपर बोझ डाल कर कुरबानी करती है। वास्तव में तो यह सब खर्च चाहे किसी इन्सान की मदद के लिए हो,या धर्म के लिए खर्च करना हो अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए है। अल्लाह तआला को अपनी ज़ात के लिए तो किसी माल की ज़रूरत ही नहीं। इस के लिए खर्च करने का अर्थ ही है कि इस की सृष्टि की बेहतरी के लिए और इस के धर्म की बेहतरी के

लिए खर्च किया जाए ।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में फरमाते हैं। हदीसे कुदसी है कि अल्लाह तआला फरमाता है कि हे आदम के बेटे तू अपना ख़ज़ाना मेरे पास जमा कर के संतुष्ट हो जा, न आग लगने का खतरा न पानी में डूबने का खतरा और न किसी चोर की चोरी का डर। मेरे पास रखा हुआ ख़ज़ाना मैं पूरा उस दिन दूंगा जब तू सब से अधिक इस का चाहने वाला होगा।

(कनज़ुल उमाल जिल्द 6 पृ.ठ 352 हदीस 16021 प्रकाशन मौअस्सत अर्रिसाला बैरूत 1985 ई)

इसलिए, जो कुछ भी हम व्यय के रूप में खर्च करते हैं, आर अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए खर्च करते हैं, अल्लाह तआला फरमाता है कि यह वास्तव में खर्च नहीं है। बल्कि मेरी ख़ुशी चाहने के लिए जो खर्च तुम ने किया क्या वह वास्तव में खर्च नहीं है, बल्कि तुम्हारे खाते में इकट्ठा हो गया है, और जब तुम्हें इस की ज़रूरत होगी अल्लाह तआला इसे वापस कर देगा।

इसी तरह एक रिवायत में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क़यामत के दिन हिसाब किताब समाप्ति होने तक अल्लाह की राह में खर्च करने वाले अल्लाह तआली की राह में खर्च किए हुए अल्लाह तआला की छाया में होंगे।

(अहमद बिन हंबल, जल्द 5, पेज 895 हदीस 17466 मुद्रित आलेमुल कुतुब बैरूत 1998 ई)

लेकिन इसके साथ ही आपने एक जगह यह भी शर्त लगाई हुई है कि अल्लाह तआला को गन्दा माल पसन्द नहीं है ग़लत तरीकों से कमाया हुआ माल पसन्द नहीं है। बल्कि पाक कमाई और मेहनत से कमाया हुआ माल अगर इस की राह में खर्च होगा तो स्वीकार होगा।

(सहीह बुख़ारी किताबुल तौहीद हदीस 7430)

अत: हमें इस बात के प्रत्येक समय अपने सामने रखना चाहिए कि हमारा माल हमेशा पाक माल रहे।

कैसे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा किस प्रकार कोशिश करके और मेहनत कर के सिर्फ अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की किसी माली तहरीक में भाग लेने के लिए कमाते थे और चन्दे देते थे। इस का एक रिवायत में इस प्रकार वर्णन मिलता है। हज़रत अबु मसूद अंसारी कहते हैं कि आँ हज़रत आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब भी सदके और वित्तीय कुरबानी का इरशाद फ़रमाते तो हम में से कुछ बाज़ार जाते और वहाँ मेहनत मज़दूरी करते हैं और किसी को मजदूरी के रूप में अगर एक मुद भी मिलता तो वह उसे तहरीक मैं खर्च करता।

मुद एक अरबा पैमाना है जिस से अनाज तौला या नापा जाता है शायद किलो से भी कम वज़न हो या इस के बराबर हो। परन्तु बहरहाल वह सहाबी कहते हैं कि उस समय जिन का यह हाल था कि कुरबानी में हिस्सा लेने के लिए बाज़ार जाते थे और कमाई करते थे अब अल्लाह तआला ने उन्हें इस दुनिया में जो नवाज़ा है तो उन में से कुछ की यह हालत है कि एक एक लाख दिरहम या दीनार उन के पास है। (सहीह बुख़ारी हदीस 1416)

अबू बकर सिद्दीक के बारे में एक रिवायत में आता है कि जब वह मुसलमान हुए तो उन के पास कारोबार और जायदाद के अलावा जो कुछ उन के पास चालीस हज़ार अशरफी जमा थी। उन्होंने इरादा किया कि यह सब धर्म के लिए खर्च कर दूं और खर्च करते रहे और हिजरत के समय उन के पास सिर्फ पांच सौ अशरफी बची थी।(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सईद जिल्द 3 पृष्ठ 91 बाब ज़िक्रे इस्लाम अबी बकर मुद्रित दारुल अहया तुरास अल्अरबी बैरूत 1996 ई)

आज, अगर उस ज़माना की अशरफी का जो सोने की अशरफी थी। क़ीमत के लिहाज़ से अन्दाज़ा लगाएं तो ग्यारह बारह मिलयन पाऊंड बनेंगे। हमारे हमारे वक्फे जदीद का जो सारा बजट है उस से अधिक कुरबानी है। तो साहबा का यह हाल था कि जिन के पास कुछ नहीं था तो उन्होंने भी मेहनत कर कर के चाहे पैनी या कुछ सेन्ट दिए हों चन्द रुपए दिए हों वह देने की कोशिश की और जिन के पास थे उन्होंने ग़रीब होने की कोई परवाह न की। और अल्लाह की राह में नि:सन्कोच खर्च किया।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा में हम देखते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की कुरबानी के किस्से सुनते हैं। जब भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया आप ने अत्याधिक कुरबानी की । इसी प्रकार हज़रत डाक्टर ख़लीफा रशीदुद्दूीन साहिब थे जो उम्मे नासिर के पिता थे उन्होंने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा के बारे में सुना तो शीघ्र कहा कि इतने बड़े दावा करने वाला आदमी झूठा नहीं हो सकता। और तुरंत बैअत कर ली और वित्तीय बलिदानों में आगे रहे। व्यवसाय की दृष्टि से एक डॉक्टर थे। सरकारी कर्मचारी थे। और बड़ी सुविधा थी। अच्छा कमाते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन को अपने बारह हवारियों में लिखा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने कहा कि उनकी कुरबानियां इतनी बढ़ी हुई थीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आप को यह प्रमाणपत्र दिया कि आप ने सिलसिला के लिए इस कदर वित्तीय बलिदान किए हैं कि भविष्य में बलिदान की ज़रूरत नहीं। बहरहाल ये लोग बलिदान करते थे लेकिन इस दस्तावेज़ के बावजूद ऐसा नहीं है कि उन्होंने कुरबानी करनी छोड़ दी। वह बलिदान करते चले गए जब गुरदासपुर का मुकदमा चल रहा था तो उस सम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दोस्तों में यह तहरीक की कि खर्च बढ़ रहे हैं मुकदमा के भी खर्च है विशेष रूप से जो लंगर ख़ाना है इस के बहुत खर्च हैं क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद के वहां ठहरने के करण गुरदासपुर में भी लंगर चल रहा था दोनों स्थानों पर लंगर चल रहा था तो इस के लिए जब आपने रकम की तहरीक की तो इस पर ख़लीफा रशीदुद्दीन साहिब जिन को उसी दिन तंख्वाह मिली थी जिस दिन को इस तहरीक का पता चला अत: उन्होंने अपनी सारी तंख्वाह जो उस, ज़माना में लगभग 400 रुपए थी और बहुत बड़ी रकम थी। आज कल के लाखों के बराबर है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में भिजवा दी। उन को उन के किसी दोस्त ने कहा कि अपने घर की ज़रूरत के लिए कुछ रख लेते तो उन्होंने कहा कि ख़ुदा का मसीह कहता है कि धर्म के लिए ज़रूरत है तो फिर किस के लिए रखता।

(उद्धरित तकारीर जलसा सालना 1926ई अन्वारुल उलूम जिल्द 9 पृष्ठ 403)

अत: जब धर्म के लिए ज़रूरत है तो धर्म के लिए ही सब कुछ जाएगा।

इसी तरह, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े प्यार से अपने कुछ ग़रीब अहमिदयों का भी वर्णन किया है। इन की कुरबानी का वर्णन किया है आप फरमाते हैं कि हैं कि मैं अपनी जमाअत के प्रेम और ईमानदारी से हैरान हूं कि उनमें से बहुत ही कम रोज़गार वाले जैसे मियां जमालुद्दीन और ख़ैरुद्दीन और इमामुद्दीन कशमीरी मेरे गाव से क़रीब ही रहने वाले हैं मेरे गांव के करीब हैं। वे तीनों ग़रीब भाई हैं जो शायद तीन या चार आना रोज़गार रोज़ाना करते हैं लेकिन जोश से एक महीने की चन्दा में शामिल हैं। नियमित चन्दा देते हैं।

फिर आपने फरमाया कि उनके दोस्त मियाँ अब्दुल अज़ीज पटवारी की ईमानदारी से भी आश्चर्यचकित हूं। रोज़गार की कमी के बावजूद एक दिन सौ रुपये दिए कि मैं चाहता हूं कि ख़ुदा की राह में खर्च हो जावे। आप फरमाते हैं वह सौ रुपया उस ग़रीब ने कई बरसों में जमा किया होगा परन्तु अल्लाह तआला के लिए जोश ने ख़ुदा की ख़ुशी को जोश दिला दिया।

(उद्धरित ज़मीमा रसाला अंजामे आथम रूहानी खज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ 313-314)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की मैंने एक दो घटनाएं वर्णन की हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सहाबा की एक दो घटनाएं वर्णन की हैं। यह जो माली कुरबानियों को सिलसिला है यह ख़ुदा तआला के आदेश के अनुसार हुआ है और अल्लाह तआला के फज़ल से आज भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में नज़र आता है अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को इस की समझ दी है जैसा कि मैंने कहा दुनिया में किसी और को नहीं है और इस के बेशमुार नमूने हम प्रत्येक साल देखते हैं।

आज चूंकि परंपरा के अनुसार जनवरी के पहले ख़ुत्बा में वक्फे जदीद में माली कुरबानी करने वालों के कुछ ईमान वर्धक घटनाए वर्णन करूंगा । किस प्रकार फिर अल्लाह तआला उन की कुरबानियों के कारण उन्हें इस दुनिया में नवाज़ देता है जो उन के ईमान की मज़बूती का कारण बनती हैं।

माली कुरबानी किस शौक से लोग करते हैं और इस नमूना पर अमल करते हैं जो सहाबा करते थे जिस का मैंने वर्णन किया माली तहरीक पर सहाबा बाज़ार जाते थे और जो मामूली मज़दूरी मिलती थी उस को लाकर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश करते थे। ऐसे नमूने हम में आज भी मिलते हैं।

बुर्किना फासो के अमीर साहिब लिखते हैं कि बुद गोरेजिन में हमारी एक जमाअत कारी (Kari) क्षेत्र में है इसके पास सरकारी जमीन में एक फाइबर ऑप्टिक वायर बिछा रही है, तो कारी जमाअत के कुछ ख़ुद्दाम ने ठेकेदार से बात की है कि वह उन्हें एक किलोमीटर खुदाई का काम दे। इसलिए काम मिलने पर उन्होंने ख़ुदाई का काम किया। और इस के बदले में मिलने वाली एक मिलियन फ्रैंक सीफा जो

लगभग कोई बारह सौ पाऊंड बनते हैं वक्फ जदीद के चन्दा में अदा कर दिए। अत: यह भावना है जैसा कि मैंने कहा कि जमाअत के इलावा और कहीं दिखाई नहीं देता।

अल्लाह तआला किस प्रकार नौजवानो और बच्चों के ईमानों में वृद्धि करता है इस का उदाहरण देता हूं। बुर्कीना फासो के देश में बनफूरह रीजन की एक जमाअत है। वहां के एक मैंबर अपनी घटना सुनाते हैं कि कहते हैं कि मैंने एक सफर पर जाना था। और वक्फे जदीद का साल ख़त्म हो रहा था। दूसरी तरफ, फसल की भी कटाई हो रही थी। अर्थात काटी जा रही थी। तो मैंने अपने बच्चों को बताया कि जब फसल पूरी हो गई है, तो इस में से दसवां हिस्सा निकाल कर चन्दा में दे देना। यह कहकर मैं सफर पर चला गया। बाद में बच्चे जो फसल थी अनाज था सारा घर में ले गए और चन्दा नहीं दिया। इस पर मैंने बच्चों से कहा कि अभी सारा अनाज घर से निकालो। अत: जब बच्चों ने वह सारा अनाज घर से निकाला तो चन्दे का हिस्सा घर से निकाल कर इसी जगह पर वापस रखा तो कहते हैं कि इस में कोई भी कमी नहीं हुई और बच्चे यह चीज़ देख कर हैरान हो गए कि चन्दा अलग किया है परन्तु इस के बावजूद अनाज इतने का इतना ही है। इस पर कहते हैं कि मैंने उन्हें बताया कि यह अल्लाह तआला ने आप लोगों को दिखाया है कि अल्लाह तआला की राह में माल खर्च करने से कम नहीं होता बल्कि अधिक होता है। यह सही इस्लाम की शिक्षा पर अमल करने वाले उन लोगों का ईमान है जो हज़ारों मील दूर बैठे हैं और उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को स्वीकार किया।

चन्दा की बरकत से मुश्किलों के दूर होने और मज़बूती ईमान की भी एक घटना वर्णन करता है। एवरीकोस्ट की जमाअत दिपन्कू है। वहां से सम्बन्ध रखने वाले एक दोस्त याक़ूब साहिब कहते हैं कि मैं देर से अहमदी था परन्तु चन्दा के निज़ाम में शामिल नहीं था। पहले मेरे जीवन में हमेशा समस्याएँ होती थीं। कभी बच्चे बीमार रहते थे तो कभी फ़सल के कारण परेशानी रहती थी। परन्तु पिछले तीन साल से चन्दा वक्फे जदीद के बरकत वाल निज़ाम में शामिल हों। और अल्लाह तआला के फज़ल से माली निज़ाम के स्थायी हिस्सा बनने का बाद ख़ुदा तआला ने मेरा जीवन बदल दिया है। अब मेरे बच्चे पहले से अधिक सेहत वाले हैं और फसल भी अधिक होती है।

अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए नए अहमिदयों में भी कुरबानी की रूह पैदा हो रही है। एवरीकोस्ट के एक दोस्त ज़बलो अहमद साहिब ने कुछ समय पहले ईसाइयत से अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ पाई। अपने शहर में अकेले अहमदी हैं। और नियमित मेरे ख़ुत्बे सुनते हैं। बहुत से जमाअत के प्रोग्राम भी सुनते रहते हैं। इन में बहुत ईमान है। उन्होंने ईमान और श्रद्धा में बहुत तरक्की की है। बैअत के बाद फ्रेंच भाषा में जमाअत का मौजूद साहित्य का अध्ययन किया, और अब एक अच्छे दाई इलल्लाह भी बन चुके हैं। प्रचार करते हैं। उन्होंने अपना गांव छोड़ कर हमारे मिशन के निकट निवास करना शुरू किया है ताकि इस्लाम के बारे में अधिक से अधिक जान सकें। उस समय के दौरान उन के पास काम नहीं था। काम की तलाश में थे केवल उसकी पत्नी कुछ पैसे कमा रही थी और इस से घर का खर्च चल रहा था। उन्हें जब चन्दा की तहरीक की गई तो विपरीत परिस्थितियों के बावजूद पांच हज़ार फ्रैंक सीफा की रकम चन्दा में अदा कर दी और कहा कि यह मेरा और मेरे परिवार का चन्दा है। ठीक है, स्थिति ख़राब है, लेकिन चन्दा की बरकतों से मैं वंचित नहीं रहना चाहता।

चन्दा देने वालों को अल्लाह तआला की तरफ से कैसे शांति मिलती? इस संबंध में, आइवरी कोस्ट में हमारे एक मुबल्लिग़ ने लिखा है कि बन्दो कोरो शहर इवरी कोस्ट में इस्लाम का गढ़ समझा जाता है और मौलवियों की प्रचुरता है। यहां एक तबलीग़ के नतीजा में एक दोस्त अबदुर्रहमान साहिब ने बैअत की। उन को जमाअत के साथ परिचय एक पम्फैलट के माध्यम से हुआ। वह वर्णन करते हैं कि मैं चार साल पहले अपने परिवार के साख मुसलमान हो गया था परन्तु मेरा दिल सन्तुष्ट नहीं था परन्तु जब जमाअत के बारे में पता चला और कुछ प्रश्न किए तो मेरे सारों सवालों के जवाब मिल गए और मैंने बैअत कर ली। कहते हैं जब मैं ने बैअत की तो दिसम्बर का महीना था। मुबल्लिग़ साहिब ने मस्जिद में चन्दा वक्फे जदीद का महत्त्व बताया और चन्दे की तहरीक की। मेरी जेब में उस समय दो हज़ार फ्रांक सीफा थे। मैंने एक हज़ार उसी समय वक्फे जदीद की मद में दे दिए।। कहते हैं अलहम्दो लिल्लाह उस दिन से अल्लाह तआला ने मेरा जीवन ही बदल दिया है। अल्लाह तआला ने मेरे दिल में बरकत डाल दी है। जिस जगह मैं काम करता हूं वहां अफसर समते सारे लोग मेकी इज़्जत करते हैं और सीमित आय में भी इतनी बरकत डाल दी है कि ख़ुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा हूं। महोदय बैअत करने के बात से ही चन्दे के निज़ाम में के स्थायी हिस्सा बन गए हैं।

तंज़ानिया के एक गांव जीनाई पाऊला साहिब का उदाहरण है। गांव का नाम Shatimba है। वह वर्णन करते हैं कि मैं चन्दा देने के मामले में बहुत कंजूसी करता था। कहते हैं कि जब मुझे चन्दा के बारे में याददहानी करवाई जाती थी तो मैं कोई न कोई बहाना बना देता था। कहते हैं मैं कोयला तैय्यार करने का काम करता हूं और मेरे आर्थिक हालत भी बहुत अच्छी न थी। इसलिए मैं चन्दा देने से बचता था परन्तु जब मुझे अल्लाह तआला की राह में खर्च करने का विषय समझ आया मेरी ज़न्दगी ही बदल गई। और इस साल जब मैंने फसल लगाई तो जिस खेत से पहले आठ या दस बोरियां मिलती थीं उसी खेत से चावलों की छप्पन बोरियां मुझे प्राप्त हईं। वह कहते हैं कि यह सब कुथ अल्लाह तआला के रास्ता में खर्च करने का नतीजा है। जब से मैंने चन्दा देना शुरु किया है मेरी जीवन बदल गया है मेरी आर्थिक अवस्था बदल गई है अब मैं छ कमरों का नया मकान बना रहा हूं और बड़ा घर बनाने का कारण यह है कि मैं चाहता हूं कि तब भी जमाअत के मेहमान हमारे गाव आएं तो मेरे घर में रहें। और मुझे मेज़बानी का सौभाग्य प्राप्त हो। अब यह खर्च भी जो अपने रहने वाले मकान के लिए कर रहा हूं इस में भी उन्होंने अल्लाह तआला की ख़ुशी और उस के धर्म की ख़ुशी को प्राथमिकता दी है। उस के धर्म के लिए खर्च करना उन की पहली प्राथमिकता है।

माली के मुबल्लिग़ साहिब लिखते हैं कि हमारे मिश्न हाऊस में एक दोस्त अबदुर्रहमान साहिब आए और कहने लगे कि मैं बैअत करना चाहता हूं। जब उन से पूछा गया कि आप क्यों बैअत करना चाहते हैं तो कहने लगे कि मेरे दादा एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग थे। उन्होंने हमें बताया कि इमाम महदी अलैहिस्सालम आ चुके हैं और उस की एक निशानी यह बताई थी कि इमाम महदी के मानने वाले इस्लाम के प्रचार के काम में इमाम महदी की आर्थिक सहायता करेंगे। जब मैंने आप लोगों का रेडियो सुना तो कहते हैं कि मैंने रेडियो में सुना कि जो इमाम महदी अलैहिस्सालम के आने का एलान करता है और साथ ही ख़लीफतुल मसीह के ख़ुत्बात सुने जिन में वह माली कुरबानी के घटनाओं का वर्णन करते हैं तो मुझे विश्वास हो गया कि यही इमाम महदी हैं जिन के बारे में हमारे दादा ने ख़बर दी थी इसलिए मैं बैअत करना चाहता हूं। अत: महोदय ने बैअत भी की और नियमित चन्दा भी दे रहे हैं।

ग़रीबी की चरम को पहुंचे हुए जो लोग हैं वे भी माली कुरबानी करते हैं। और फिर अल्लाह तआला भी उन्हें अदभुत रूप से नवाज़ता है और उन के ईमानों को मज़बूत करता है। गेम्बिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि एक औरत फतिमा जालू साहिबा जिन की आयु उनचास वर्ष है वह नयामीना पूर्व में कोन्डा नामक गांव में रहती हैं। जब इन्हें वक्फे जदीद की तहरीक की तो तो कहने लगीं कि मेरे पास पैसे तो नहीं हैं परन्तु मेरी सहेली ने कुछ दिन पहले मुझे एक मुर्ग़ी तोहफा में दी थी। अब यही वही उदाहरण है जिस प्रकार कादियान में एक औरत मुर्ग़ी के अन्डे और मुर्ग़ी लेकर हज़रत मुस्लेह मौऊद के पास गई थी। जो उसे किसी ने तोहफा में दी थी कि जमाअत अगर इसे स्वीकार कर लेगी तो वह वक्फे जदीद का चन्दा अदा करेगी। अत: उन्होंने मुर्ग़ी ही चन्दा में दे दी। चन्दा अदा करने के बाद कहने लगीं कि मैं अपने चाचा के बारे में बहुत परेशान हूं जो घर के अकेले कमाने वाले हैं। और चार महीने पहले उन्हें सेनिगाल में उपद्रव के कारण सज़ा सुनाई गई थी। और वह जेल में हैं मुझे उन्होंने दुआ के लिए ख़त लिखा है और इस के बाद कहती हैं कि चन्दा भी अदा किया है बहरहाल चन्दा की बरकत थी। कहती हैं कि दो महीने बाद उन्हें ख़बर मिली कि उन के चाचा को गावर्मेन्ट ने माफ कर दिया है और वह जेल से रिहा हो गए हैं। उन की रिहाई के बारे में जिस ने भी सुना वह कहता था कि यह कोई चमत्कार है वरना इस जुर्म में रिहाई असम्भव है। इस औरत के चाचा लामीन जालू साहिब हैं। उन को जब इस घटना का पता चला कि उन की भतीजी ने इस प्रकार चन्दा अदा किया था और मुझे दुआ के लिए भी लिखा था और फिर उन की रिहाई भी हो गई तो उस से बहुत प्रभावित हुईं और उन्होंने अहमदियत स्वीकार कर ली। अब अल्लाह तआला के फज़ल सा फतिमा साहिबा नियमित रूप से चन्दा अदा करती हैं। तब्लीग़ भी करती हैं और लोगों को बताती हैं कि चन्दा की बरकत के नतीजा में इन का चाचा को रिहाई मिल गई जिस के कारण वह परेशान थीं।

फिर केवल अफ्रीका में ही नहीं, अल्लाह तआला के फज़ल से इन तरक्की करने वाले देशों में भी ईमान और श्रद्धा का नमूना दिखलाते हैं।

ऑस्ट्रेलिय के मुबल्लिग़ सय्यद वदूद अहमद साहिब कहते हैं कि मेलबोर्न में एक छात्र जो विश्वविद्यालय में पढ़ रहा है, वह अपने वादा के अनुसार वक्फे जदीद का चन्दा अदा कर चुके हैं लेकिन फिर से, शुक्रवार को वित्तीय कुरबानियों पर ध्यान दिलाया गया। इस पर उस ख़ादिम ने और पांच सौ डालर का वादा जा किया और

अगले दिन अदा भी कर दिए। ये ख़ादिम पढ़ा के साथ अंशकालिक काम भी करते हैं, और हर पन्द्रह दिनों के बाद उन्हें पांच सौ तीस डालर मिलते हैं, लेकिन इस हफ्ते वे कहते हैं कि उन्हें 1230 डॉलर प्राप्त हुए, जिस की उन्हें बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। कहने लगे यह केवल अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करने के कारण है।

फिर अमीर साहिब फिजी नसरोवांगो जमाअत से सम्बन्ध रखने वाले एक नौजवान के बारे में लिखते हैं कि बहुत ही नेक हैं सैक्रेटरी माल के रूप में सेवा कर रहे हैं उन्होंने जब से चन्दा अदा करना शुरू किया है अल्लाह तआला ने उन के कारोबार में बरकत डाली है। उन की पत्नी जो कि ईसाई ख़ानदान से आई हुई हैं वह कहती हैं कि सब धर्म की सेवा और माली क़ुरबानी का कारण है वरना हमारे कर्ज़े समाप्त ही नहीं होते थे।

फिर बैनिन पारोको क्षेत्र की एक पुरानी जमाअत इना है वहां के मुअल्लिम हमीद साहिब लिखते हैं कि यहां कि स्थानीय लोग ज़्यादातर खेती करते हैं और कपास की खेती करते हैं। इस वर्ष, किसानों ने कपास चुन कर गांव के पास एक ढेर लगाया ताकि उसे कारखाने में भिजवाया जा सके। लेकिन एक दिन कपास के ढेर को आग लग गी और करोड़ों रुपए की कपास जल कर राख हो गई। उस समय केवल एक आदमी की कपास बची जो जमाअत के सदस्य हैं और श्रद्धावान हैं। स्थानीय लोगों ने उन्हें कहा कि यह तो एक चमत्कार है जो अल्लाह तआला ने आपकी कपास को बचाया है। इस पर, वह अहमदी दोस्त कहने लगे कि मेरा मानना है कि ख़ुदा तआला ने मेरे माल को इसलिए बचाया है कि मैं अहमदी हूं और मैं हर महीन अल्लाह की राह में चन्दा देता हूं।

कांगो ब्राज़वील के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि औरत आयशा सरकारी स्कूल में पढ़ाती हैं एक दिन यह अपने बेटे के साथ मिशन हाऊस आईं और माली परेशानी की चिन्ता व्यक्त की। माली परेशानी का एक कारण पति की तरफ से अधिक खर्च न दिए जाने के इलावा सरकार की तरफ से जो टीचर के रूप में उन का इलाउंस मिलता था उस का न मिलना भी था। वह भी पिछले क़र्ज़ा के कारण आधा मिल रहा था। उन्होंने कर्ज़ लिया हुआ था आधा वेतन मिल रहा था। पति कुछ दे नहीं रहा था बहुत परेशान थीं। यह कहते हैं कि उन की परेशानी के सुन कर उन्होंने मुझे ख़त लिखने का कहा कि दुआ के लिए ख़त लिखें और यह तरीका यह बताया कि जितना भी सामर्थ्य है आप चन्दा नियमित रूप से अदा करें। कहते हैं कि उन्होंने शीघ्र ख़त तो लिखा परन्तु चन्दा भी नियमित रूप से अदा करने लगीं। और अपनी फैमली का तरफ से भी चन्दा अदा किया। कहती हैं कि अभी कुछ दिन गुज़रे थे कि पति ने अपने आप घर का किराया बच्चे की स्कूल फीस अदा करनी शुरु कर दी दूसरी तरफ इन की बड़ी बहन जिन्होंने पिता जी की सारी जायदाद पर कब्ज़ा किया हुआ था उस ने पहली बार अपनी इस बहन का एक लाख सीफा भेजा। इस अहमदी औरत ने शीघ्र मिश्न हाऊस फोन कर के सूचना दी कि चन्दा की बरकत से मेरी सारी परेशानी दूर हो गई है और फिर ख़ुदा मिशन हाऊस आ कर इस रकम में से दस हज़ार सीफा चन्दा अदा किया।

सदर लजना कैनेडा लिखती हैं कि एक विश्वविद्यालय की एक छात्रा ने कहा कि एक बार मेरी स्थानीय सचिव, वक्फे जदीद ने मुझे कहा कि तुम चन्दा वक्फे जदीद ज़रूर दो। अल्लाह तआला तुम्हारी समस्याएं दूर करेगा। उस बच्ची ने बताया कि उस समय मेरे पास केवल पचास डॉलर थे जो कि एक छात्र होने के नाते मेरे लिए बहुत बड़ी राशि थी लेकिन मैंने चंदा वक्फे जदीद अदा कर दिया और ख़ुदा तआला के मार्ग में यह राशि देने के कुछ समय बाद ही मुझे विश्वविद्यालय से 800 $ का स्कालर शिप मिल गया और अल्लाह तआला ने मुझे मेरी क़ुरबानी से बहुत अधिक नवाज़ा।

मिस्र के हमारे एक अहमदी अबदुर्रहमान साहिब हैं वह कहते हैं कि जब उन्होंने लिखा। शायद उन्होंने जून में लिखा था। कहते हैं कि पिछले शुक्रवार को मेरे पास 100 मिस्र के पाऊंड थे, जिनमें से पचास पाऊंड मैंने जमाअत को दे दिए और 50 सफर खर्च और बाकी ज़रूरत के लिए रखे। मैं अपने घर और इलाका से दूर रहता हूं जहां ख़ुदा के सिवा मेरा कोई नहीं। अगले दिन, अचानक यह पता चला कि मासिक वेतन जो प्राय: देरी से आता है, वह जल्दी आ गया है और मुझे उसी दिन प्राप्त करना है। हालांकि मैं दो दिन बाद गया तो मैं देखता हूं कि सरकार ने वेतन में 60 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। अब मेरा इरादा हैं कि अगले शुक्रवार को इसका आधा हिस्सा भी ख़ुदा की राह में दे दूं। दुआ करें कि ख़ुदा तआला अपना राह में खर्च करने का आन्नद प्राप्त करवाए ।

फिर भारत के हमारे एक इंस्पेक्टर सलीम खान हैं लिखते हैं कि गुजरात प्रदेश की एक जमाअत समबड़याला के दौरे पर गए तो वहाँ एक दोस्त से फोन पर संपर्क हुआ। उन्हें बताया कि हम एक घंटे तक आपकी तरफ आ रहे हैं। एक घंटे बाद, वह कहता है कि बातचीत चल रही थी और अचानक दो लोग आए और उनसे बात की। फिर उसने अपना रेफ्रिजरेटर उठाकर ले गए। कहते हैं मैं ने उन से पूछा यह किया है? उन्होंने कहा कि बात है कि आपने कहा था कि हम आ रहे हैं और पैसे हमारे आज थे तो रेफ्रिजरेटर घर पर पड़ा हुआ था। मैंने इसका सौदा कर दिया और इस को बेच दिया । इस पर कहते हैं कि हम ने कहा कि इस की इतनी जल्दी क्या थी। न करते अभी भी वापस रख लें उन्होंने कहा यह नहीं हो सकता कि केन्द्र से प्रतिनिधि या केंद्र के प्रतिनिधित्व में कोई व्यक्ति हमारे पास आए और हम इसे ख़ाली छोड़ दें। रेफ्रिजरेटर का क्या है, रेफ्रिजरेटर हम फिर से इन्शा अल्लाह खरीद लेंगे। अल्लाह तआला उन के धन में बरकत डाले। महोदय किराए के घर में रहते हैं। मिस्त्री का काम करते हैं परन्तु अपनी ग़रीबी के कारण अल्लाह की राह में क़ुरबानी से मुंह मोड़ा।

इसी तरह भारत से ही इंस्पेक्टर वक्फे जदीद मुनव्वर साहिब हैं वह लिखते हैं कि जमाअत सांधन यूपी के दौरे के दौरान एक दोस्त के पास चंदा वक्फे जदीद वसूली के लिए गए तो उन्होंने अपनी परेशानी व्यक्त करते हुए कहा कि अब हालात ठीक नहीं। आप कल सुबह आ जाएं फिर देखते हैं। कहते हैं कि अगले दिन मैं दोबारा उन के घर गया, महोदय ने कहा कि धन की व्यवस्था नहीं हो पाई। इन बच्चों को देखें बच्चों में क़ुरबानी की कितनी रूह है? उसकी छोटी बेटी क़रीब खड़ी सुन रही थी, वह अपने पिता के पास आई और कहा कि आपने मुझ से वादा किया है कि सर्दी बढ़ रही है और आप सर्दी में जूते खरीद कर देंगे। आप ने शीतकालीन जूते के लिए जो राशि दी है वह मुझे दे दें। बच्ची ने अपने पिता से ज़िद करके अपने पिता से यह रकम प्राप्त की और सारी चन्दा वक्फे जदीद में अदा कर दी और कहने लगी कि जूते तो बाद में आते रहेंगे पहले चन्दा दे दें। वैसे तो मैंने उन को कहा हुआ है कि ऐसे घरों से ऐसे लोगों का ध्यान रखा करें और वह देना चाहें भी तो उन से न लिया करें परन्तु कुछ लोग मजबूर करते हैं और ज़िद करके देते हैं परन्तु जमाअत को बाद में उन का ध्यान भी रखना चाहिए।

फिर इंडिया के वक्फे जदीद के इंस्पेकट्रर फरीद साहिब हैं वह कहते हैं कि नवंबर के महीने में यूपी में वक्फे जदीद के वित्तीय दौरे पर गया तो पता चला कि मेरठ में भी एक अहमदी घर है जो कई वर्षों से जमाअत के संपर्क में नहीं है। इसलिए जब उनके घर पहुंचे और वित्तीय क़ुरबानियों पर ध्यान दिलाया तो उन्होंने कहा, "हम वक्फे जदीद ही नहीं बल्कि सारे चन्दों में शामिल होना चाहते हैं। अत: महोदय ने अपना अनिवार्य बजट लिखवाया और वक्फे जदीद और तहरीक जदीद, ज़ैली तंज़ीमों का चन्दा का बजट बनवाया और पंद्रह हज़ार रुपये उसी समय वक्फे जदीद का चन्दा अदा किया। इस प्रकार अल्लाह तआला वक्फे जदीद की तहरीक के कारण एक ख़ानदान का जमाअत अहमदिया से सम्पर्क स्थापित कर दिया। अत: जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं कि हमारी तरफ हमारे काम करने वालों की तरफ से सुस्ती होती है। जमाअतों से सम्पर्क नहीं होता और कई बार एक लम्बा समय तक नहीं होता। इस लिए सारे निज़ाम को सक्रिय होना चाहिए ताकि लोगों तक पहुंच सकें।

ये कुछ घटनाएं हैं जो मैंने वर्णन की हैं। यह जहां धर्म के लिए वित्तीय बलिदान करने के बारे में पता देती हैं, वहां यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सदाकत और जमाअत की सच्चाई और इस के अल्लाह तआला की तरफ से स्थापिक करने की भी एक दलील है अल्लाह तआला करे कि जमाअत के लोगों का ईमान और विश्वास तरक्की करे और वह अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने का लिए हमेशा क़ुरबानियों में बढ़ते रहें।

पिछले साल में जमाअत ने वक्फे जदीद में जो क़ुरबानियां दीं और जमाअतकी जो अवस्था है इस बारे में अब कुछ बताऊंगा।

अल्लाह तआला के फज़ल से 31 दिसंबर को वक्फे जदीद का 60 वां वर्ष समाप्त हुआ है। 1 जनवरी से 61 वां नया साल शुरू हो गया है, और विश्वव्यापि जमाअत अहमदिया ने वक्फे जदीद में 135 मिलियन पाउंड का बलिदान प्रस्तुत किया । पिछले साल की तुलना में यह आठ 842000 हज़ार पाउंड अधिक है। पाकिस्तान के अलावा, यह तो समग्र वसूली की दृष्टि से पहले नम्बर पर है। बाकी जो दुनिया में वक्फे जदीद की स्थिति है वह पहले दस देशों की इस तरह है कि ब्रिटेन पहले नंबर पर है, जर्मनी दूसरे नंबर पर है तहरीक जदीद में यह उलट था, अमेरिका तीसरे नंबर पर, कनाडा चौथे नंबर पर भारत पांचवें स्थान पर, ऑस्ट्रेलिया छठे नंबर पर, मध्य पूर्व की एक जमाअत है सातवें स्थान पर, इंडोनेशिया आठवें नंबर पर,

फिर नौवें नंबर पर मध्य पूर्व की जमाअत पार्टी है घाना दसवें नंबर पर, घाना ने भी इस बार काफी प्रगति की है।

स्थानीय मुद्रा के आधार पर पिछले वर्ष के आधार पर वृद्धि करने वाले देशों में इस साल कनाडा ने सर्व प्रथम स्थान पर है। इस ने काफी तरक्की की है। इस के अतिरिक्ति अफ्रीका के देशों में नाइजीरिया ने बहुत वृद्धि हुई है। माली ने 55 प्रतिशत वृद्धि हुई है। सीरियलिओन ने 45 प्रतिशत की वृद्धि की है। कैमरून ने 45 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। घाना में 24 प्रतिशत की वृद्धि की है अर्थात पिछले साल के मुकाबले यह अधिक वसूली है।

शामिल होने वालों की संख्या असल तो यह चीज़ है कि शामिल होने वालों की संख्या बढ़नी चाहिए। अल्लाह तआला की कृपा से इस साल वक्फे जदीद में सोलह लाख से अधिक चंदा देने वाले शामिल हुए हैं और नए शामिल होने वालों की संख्या दो लाख अड़सठ हज़ार और शामिल होने वालों में वृद्धि आधार पर नाइजीरिया नंबर एक पर है, फिर सिएरालियोन है, फिर नाइजर है, फिर बेनिन है, फिर माली है, फिर कैमरून है, आइवरी कोस्ट है, सेनेगल है, बुर्किना फासो है, जाम्बिया है, गिनी बिसाऊ है, फिर केन्या है, तंजानिया है, जिम्बाब्वे है, उन्होंने काफी काम किया है।

वक्फे जदीद में दो चन्दे होते हैं अत्फाल का और वयस्कों को। चन्दा बालिग़ान में पाकिस्तान और कनाडा में ज्यादा काम है, लेकिन इस बार ऑस्ट्रेलिया ने भी किया है।

प्रौढ़ में पाकिस्तान में जो पहले तीन स्थान हैं इसमें पहले नंबर पर लाहौर है, दूसरे पर रबवह है, तीसरे पर कराची। और जिलों की स्थिति के आधार पर पहले नंबर पर इस्लामाबाद, फिर रावलपिंडी, फिर सरगोधा, फिर गुजरात, फिर उम्र कोट, फिर हैदराबाद, फिर मीरपुर खास, फिर डेरा गाज़ी खान, फिर कोटली कश्मीर और फिर क्वेटा।

पाकिस्तान में वसूली के मामले में जो पहली दस जमाअतें इस्लामाबाद शहर, टाउनशिप, गुलशन इकबाल कराची, सुमन आबाद लाहौर, रावलपिंडी शहर, अज़ीज़ आबाद कराची, दिल्ली गेट लाहौर, मुग़लपुरा लाहौर, सरगोधा शहर और डेरा गाजी खान सहर हैं।

अत्फाल की तीन बड़ी जमाअतें हैं। लाहौर, द्वितीय कराची, तृतीय रबवा और जिलों की स्थिति के आधार पर पहले नंबर पर सरगोधा, नंबर दो पर रावलपिंडी, नंबर तीन पर गुजरात, नंबर चार फैसलाबाद, नंबर पाँच हैदराबाद, नंबर छह नारोवाल, सात नंबर पर डेरा गाज़ी खान, आठवें पर कोटली कश्मीर, नौवें पर शेख़ोपुरा और दसवें पर बदेन।

ब्रिटेन के शीर्ष दस जमाअतें नंबर एक पर वोस्टर पार्क, नंबर दो पर मस्जिद फज़ल नंबर तीन बर्मिंघम साउथ, नंबर चार जलनघम, नंबर पांच बर्मिंघम वेस्ट छह न्यू मोलडिं, सात ग्लासगो, आठ इस्लामाबाद, नौ पटनी और दस हेस।

और क्षेत्र के आधार पर लंदन बी नंबर एक पर, लंदन ए दो, फिर मिड लैण्ड, पूर्वोत्तर, मध्य सेक्स, साउथ लंदन, इस्लामाबाद, ईस्ट लंदन, नार्थ वेस्ट और हरटस (हार्ड फोर्ड शायर) और स्कॉटलैंड।

अमेरिका की पहली दस जमाअतें हैं सिलिकॉन वैली नंबर एक पर, फिर सिएटल, डेट्रायट, सिल्वर स्प्रिंग, मध्य वर्जीनिया, बोस्टन, लॉस एंजिल्स ईस्ट, डीलस, ह्यूस्टन नार्थ और लोरल (Lourel)

वसूली के मामले में जर्मनी के पांच स्थानीय इमारतें हैं हैम्बर्ग नंबर एक पर, फ्रैंकफर्ट दो, वाज़बादन, फिर ग्रास गरूउ, मोरफलडिं वालडोरफा।

और सकल वुसूली के आधार पर दस जमाअतें हैं रोईडर मारक, नोयस, मेहदी आबाद, नीडा, फ्रेड बर्ग, कोबलनज़ फ्लोरहाईम, वाइन गर्टन, पेनबर्ग और लांगन

वसूली के मामले में कनाडा की इमारतें हैं नंबर एक पर वान, फिर कैलगरी, फिर पीस विलेज, बरीमीटन, वैंकूवर, मिसी सागा।

दस बड़ी जमाअतें डरहम नंबर एक पर, फिर एडमॉन्टन वेस्ट, सिस्काटोन साउथ। विंडसर, ब्रैड फोर्ड, सिस्काटोन नार्थ, मॉन्ट्रियल वेस्ट, लॉयड मिनिस्टर, एडमॉन्टन ईस्ट, अबोट्सफर्ड ।

और कार्यालय अत्फाल में पाँच स्पष्ट जमाअतें डरहम नंबर एक पर, फिर ब्रैडफोर्ड, सिस्काटोन साऊथ, सिस्काटोन नार्थ, लॉयड मिनिस्टर।

और दफतर अत्फाल की पांच महत्त्वपूर्ण इमारतों में पीस विलेज नंबर वन, कैलगरी, वान, वैंकूवर, वेस्टन शामिल हैं।

भारत के प्रांतों में नंबर एक पर केरल, फिर जम्मू कश्मीर, फिर तेलंगाना, कर्नाटक, फिर तमिलनाडो, फिर ओडिशा, पश्चिम बंगाल, फिर पंजाब, फिर उत्तर प्रदेश, फिर महाराष्ट्र।

और वुसूली के आधार पर भारत की जो जमाअतें हैं वे हैं कालीकट नंबर एक पर, फिर हैदराबाद, फिर पत्तपिरयम, फिर कादियान, फिर कोलकाता, फिर बेंगलोर, फिर कान्नूर टाउन,पैंगाडी, कारोलाई और कारूनागा पली।

आस्ट्रेलिया की दस जमाअतें हैं नंबर एक पर कैसल हिल, नम्बर दो बिर्ज़बेन लोगान, मारज़डिं पार्क, फिर मेल बर्न लांग वरेन, बैरोक, पीज़थ, पलंपटन, ब्लैक टाउन, ऐडेलीड साऊथ और केनब्रा।

दफ़्तर अत्फाल में आस्ट्रेलिया की जमाअतें हैं। बिर्ज़बेन लोगान, पीज़थ, बिर्ज़बेन साऊथ , मेल बर्न बैरोक, एडिलेड साऊथ, मेल बर्न लांग वरेन, पलंपटन, कैसल हिल, मारज़डिं पार्क, माउंट डरोईट।

अल्लाह तआला उन सभी कुरबानी करने वाले लोगों के मालों तथा जानों में बरकत अत फरमाए उन के ईमान तथा विश्वास में वृद्धि हो और उनमें से प्रत्येक अपने कथन तथा कर्म के अनुसार कार्य करने वाले हों।

नमाज़ के बाद एक नमाज़े जनाज़ा हाज़िर भी पढ़ाऊंगा जो प्रिय अली गौहर मुनव्वर इब्न वजीह मुनव्वर साहिब का है। यहां आल्डरशाट यू.के हैं। 23 दिसंबर, 2017 को, अपने परिवार के साथ जर्मनी जाते हुए कलेन सिटी के पास उनकी कार दुर्घटना ग्रस्त हुई। टायर फट गया था। उन की माँ कार चला रही थी। पांच साल की उम्र में उन की वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। अली गोहर वक्फे नौ की तहरीक में शामिल था उनके दादा चौधरी मुनव्वर हफीज साहिब का सम्बन्ध नारोवाल से। उन्होंने अली का नाम अपने पड़दादा हज़रत अली गौहर साहिब के नाम पर रखा था जो कि परिवार के पहले अहमदी थे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। जबकि अज़ीज़ अली के नाना आदरणीय मुहम्मद इदरीस साहिब का सम्बन्ध हैदराबाद दख्खन से है अली की मां नुसरत जहां हमारे कार्यालय के अंग्रेज़ी डाक का काम करती हैं। दुर्घटना में जैसा कि मैंने कहा, उनकी मां ही गाड़ी चला रही थी। नुसरत जहां की मां अर्थात बच्चे की नानी साथ बैठी थी उन्हें पर्याप्त चोटें भी लगी हैं और उनका इलाज अस्पताल में किया गया है। अल्लाह तआला उन्हें एक स्वस्थ और सुरक्षित जीवन दे और उनके माता-पिता को भी। बच्चे के माता-पिता को धैर्य और प्रोत्साहन प्रदान करे। अल्लाह तआला की कृपा से, माँ ने विशेष रूप से इस आघात को महान धैर्य से सहन किया है और बच्चे तो निर्दोष होते हैं। अल्लाह तआला निश्चित रूप से बच्चों को जन्नत में ले जाता है अल्लाह तआला अपने माता-पिता को धैर्य और प्रोत्साहन दे और उन्हें इस का बदला भी प्रदान करे। नमाज़ के बाद, जैसा मैंने कहा, मैं नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऊंगा। नमाज़ जनाज़ा हाज़िर है। यही कारण है कि मैं बाहर जाऊंगा और दोस्त मस्जिद के अंदर ही रहें और जनाज़ा में शामिल हों।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -8)

☆ जो नई बैअत करने वालों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात

☆ जो भी मारूफ फैसला हो इस की इताअत करनी ज़रूरी है। ख़ुदा तआला ने शरीयत उतारी शरीयत की तालीम और आदेश का मानना और उन पर अनुकरण करना इताअत है। ख़ुदा तआला कहता है कि मेरी इताअत करो तो ख़ुदा तआला की बताई हुई शरीयत के अनुसार इबादत करना ही इताअत है। कुरआन करीम ने जो आदेश दिए हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो उपदेश फरमाए और आदेश दिए हैं, ख़लीफतुल मसीह इसके अतिरिक्त कुछ कह ही नहीं सकता तो इताअत यही है।

☆फिलस्तीन से आने वाली तीन अहमदी बहनों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात,

☆ मैंने हुज़ूर अनवर के चेहरे पर एक विशेष रोशनी देखी, जिसने मेरे दिल को स्कून के साथ भर दिया।

☆ बैअत करने के बाद मेहमानों की प्रतिक्रयाएं

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

नई बैअत करने वालियों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार 7 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने आवास से बाहर आए और विभिन्न देशों से संबंध रखने वाली नई बैअत करने वालियों ने हुज़ूर अनवर से मिलने की सआदत हासिल की।

इन नई बैअत करने वालियों की संख्या 38 थी और 14 बच्चे भी इन के साथ शामिल थे। ये महिलाएं जर्मनी, नॉर्वे, तुर्की, कुर्दस्तान, इराक, कोसोवो, अफगानिस्तान, सीरिया, फ्रांस और नीदरलैंड्स से थीं। इनमें से 9 ऐसी महिलाएं थीं जिन्होंने जलसा के दिनों में बैअत की तौफीक पाई थी।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर, कि यह नई बैअत करने वालियां कहां से हैं? राष्ट्रीय सैक्रेटरी प्रशिक्षण नौमुबाई ने कहा कि ये विभिन्न राष्ट्रीयताओं से संबंधित बहनें हैं। न केवल जर्मनी से बल्कि विभिन्न देशों से भी हैं।

फ्रांस से आने वाली एक महिला ने कहा, "मैंने आज ही बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया है। महोदया ने अपने पति और आपने परिवार के लिए दुआ का निवेदन किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अल्लाह तआला फजल फरमाए। हुज़ूर अनवर के पूछने पर, महोदया ने कहा कि उनके पति का मोरक्को से है और यह ख़ुद फ्रांस से हैं।

* एक तुर्क महिला जो दो महीने पहले अहमदी हुई थीं, महोदया ने अपने पिता के लिए दुआ का निवेदन किया। उनके पिता अहमदियत के बहुत विरोधी हैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने फरमाया, "क्या आप विरोध का यह बोझ उठाने के लिए तैयार हैं? आपने आज के अन्तिम भाषण में सहाबा रिज़वानुल्लहा अजमईन की कुरबानियों की घटनाएं सुनी होंगी।

* एक जर्मन नई अहमदी औरत ने बाताया कि इस का सम्बन्ध गीज़न के क्षेत्र से है और इस ने अभी बैअत की है वह गीज़न की मस्जिद बैतुस्समद के उद्घाटन के प्रोग्राम में शामिल हुई थी। और वहां उस ने हुज़ूर के साथ तस्वीर भी बनाई थी।

*एक तुर्क महिला ने बताया कि उसने दस महीने पहले बैअत की थी और उसके माता पिता तुर्की में हैं और अहमदियत के ख़िलाफ हैं लेकिन वह अहमदियत के संदेश को आगे पहुंचाने के मिशन के लिए तैयार हैं। उस पर हुज़ूर अनवर ने कहा अभी वर्तमान में बताने की जरूरत नहीं है अगर वह विरोध करेंगे तो बेशक अभी न बतांए। महोदया ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि मेरा नाम sibel है हुज़ूर अनवर मेरा अरबी नाम रख दें। हुज़ूर अनवर ने फरमाया, "आप तुर्क मुस्लिम हैं नाम तो आप का ठीक है। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने आयशा नाम रखा।

* एक अफग़ान नई बैअत करने वाली महिला ने कहा कि उसने ग्यारह दिन पहले बैअत की है दिया था। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया, "आप ने ठीक दिन याद रखे हुए हैं। महोदया ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अपने माता पिता के अहमदियत स्वीकार करने के लिए दुआ का निवेदन किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अल्लाह तआला फज़ल फरमाए। हुज़ूर अनवर ने महोदया से पूछा कि आप कौन सी भाषा बोलती हैं पश्तो या फारसी, इस पर महोदया ने बताया कि वह फारसी बोलती हैं। हुज़ूर अनवर ने कहा कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फारसी नज़में पढ़ती हैं?

जानो दिल फिदाए जमालो मुहम्मदसत
ख़ाकम निसारे कूचाए आले मुहम्मदस्त

क्या आप यह समझती हैं? इस के बाद हुज़ूर अनवर ने सादा काग़ज़ पर यही शेर लिख कर दिया और इर्शाद फरमाया कि महोदया इसे पढ़ सकती हैं? अत: महोदया ने फारसी भाषा में वह तहरीर पढ़ी और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने जज़ाकमुल्लाह कहा।

* कुरद (इराक़) से संबंध रखने वाली एक नई बैअत करने वाली महिला ने जो कि इस समय नीदरलैंड में रहती है, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की सेवा में दुआ का अनुरोध किया और बताया कि उसके पति अहमदी नहीं हैं और उसके अहमदियों से कोई सम्पर्क नहीं है। हुज़ूर अनवर ने कहा कि जब तक पति की राय बदलती नहीं है, तब उन्हें वर्तमान में उन्हें बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप अपने अच्छे चरित्र ऐसा व्यवहार करें कि वह अपने आप उस की तरफ ध्यान देन वाले हो जाएं ? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह की पूछने पर महोदया ने बताया कि उस की एक बेटी है उसके लिए दुआ का निवेदन है।" इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अल्लाह फज़ल फरमाए।

* गाम्बिया की एक महिला ने कहा कि उसके पति ने उन्हें तलाक दिया है और उसके तीन लड़के हैं और वह अपने परिवार में एकमात्र अहमदी है। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या उसके पति ने अहमदी होने के कारण तलाक दी है और क्या बच्चे उसके साथ रहते? इस पर महोदया ने अर्ज़ किया कि उसके पति ने अहमदी होने के कारण तलाक नहीं दिया और बच्चे कभी इस के और कभी पिता के साथ रहते हैं। महोदया ने फिर से शादी करने के लिए दुआ का अनुरोध किया। अनवर ने उनसे कहा अल्लाह तआला फज़ल फरमाए। एक नई बैअत करने वाली महिला ने कहा कि उसका नाम रुक्य्या है और उस का सम्बन्ध माली देश से है 18 साल पहले बैअत की थी उस के दो बेटे और दो बेटियां थीं। उसके परिवार ने अहमदियत को स्वीकार नहीं किया है बहुत अधिक विरोध है तीन भाइयों ने अहमदियत को स्वीकार किया है पिताजी 78 वर्ष के हैं और वह अहमदी नहीं है। वह अपने पिता के लिए क्या कर सकती है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि उन्हें अपने पिता के लिए दुआ करनी चाहिए। महोदया ने अपनी बेटी सफ़िया के लिए जिस की आयु नौ साल की है और वह बीमार है, उसके स्वास्थ्य के लिए दुआ का निवेदन है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

* एक महिला ने अपनी बीमार मां के लिए दुआ का निवेदन करते हुए कहा कि वह ख़ुद भी उम्मीद से हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अल्लाह तआला फज़ल फरमाए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने प्यार से बच्चों को चाकलेट दीं। और बीमार बच्ची को प्यार दिया। नई बैअत करने वाली इन महिलाओं के साथ मुलाकात

का कार्यक्रम 7 बजकर 32 मिनट पर समाप्त हुआ।

फिलस्तीन से आने वाली तीन अहमदी बहनों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद फिलस्तीन से आने वाली तीन अहमदी बहनें समाह अब्दुल जलील साहिबा, अम्ल अब्दुल जलील साहिबा और सहर महमूद साहिबा ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य हासिल किया। अम्ल अब्दुल जलील साहिबा और सहर महमूद साहिबा को अहमदी होने के कारण तलाक दे दी गई । इन बहनों के 3/1 की वसीयत भी है पिछले दो सालों से जलसा सालाना कदियान में शामिल हो रही हैं और इस वर्ष जर्मनी के जलसा सालना में भी शामिल होने की तौफीक मिली। इन के इस सफर का का एकमात्र उद्देश्य हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात थी। हुज़ूर अनवर के दौरा जर्मनी की शुरुआत में समय कम होने के कारण मुलाकात के दौरान इन तीन बहनों के हिस्सा में जो समय आया तो वे अत्यधिक घबरा गईं। और कोई अनुवाद करने वाला न था इसलिए उनकी हुज़ूर अनवर से कोई बात नहीं हुई।

फिर जब हुज़ूर अनवर ने अरब अहमदियों और मेहमानों को सामूहिक मुलाकात का शरफ़ बख़्शा तो इन बहनों ने भी हुज़ूर अनवर से बात करने के लिए हाथ खड़ा किया लेकिन समय की कमी के कारण उनकी बारी नहीं आई।

इस स्थिति को देखकर यह बहुत परेशान थीं कि शायद अल्लाह तआला हमारे साथ नाराज़ हो क्योंकि हमें समय के ख़लीफा से मुलाकात करने का मौका नहीं मिल रहा। इसलिए, जब नई बैअत करने वालियों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात का अवसर मिला तो उन्हें उनके साथ बैठने का अवसर मिला। इस मुलाकात के अंत में, हुज़ूर अनवर ने उन्हें मिलने का मौका दिया जिसमें उन्होंने अनवर से बात की और दुआ का निवेदन भी किया। इस के बाद यह इतना भावुक हुईं कि निरन्तर रो रही थीं।

उन्होंने कहा: जर्मनी में शामिल होना हमारे लिए कोई चमत्कार नहीं था। लेकिन दुआ और अल्लाह तआला पर भरोसा के बावजूद, अल्लाह तआला ने हमारे जीवन की सबसे बड़ी इच्छा पूरी कर दी है, इस स्तर से गुज़रने के बाद हम कह सकते हैं कि जिस के दिल में समय के ख़लीफा से मिलने की सच्ची इच्छा है और वह इस लिए कोशिश करता है तो अल्लाह तआला उसके लिए सभी कठिनाइयों को रास्ते से उठा देता है। शुरू में जब समय के ख़लीफा से हमारी मुलाकात हुई तो हमारा मानना था कि हमारे पास काफी समय होगा लेकिन यह तो बहुत ही कम समय था जो पलक झपकते ही गुज़र गया और हम अपने दिल में हुज़ूर अनवर से बात न करने का अरमान लिए लौट आईं।

हमारी स्थिति असामान्य थी क्योंकि हमें अनुभव होने लगा था कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा तआला हम से नाराज़ है, इसलिए हम अपने ख़लीफा से बात नहीं कर सके। लेकिन हम हुज़ूर अनवर से ख़ुद को परिचय नहीं कर सके इसलिए हमें अगले दिनों में रोते रहना चाहिए और तौब: जारी रखनी चाहिए और ख़ुदा तआला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह से मुलाकात होने की दुआ करती रहीं। अल्हम्दो लिल्लाह दो दिन बाद हमारे लिए चमत्कार के रूप में मुलाकात हो गई जिस में हम ने हुज़ूर अनवर से अपने दिल की बहुत बातें कर लीं। यह मुलाकात इतने प्रेम भरे माहौल में हुई कि हमारी पिछली भावना जाती रही और दिल आनन्द की भावनाओं से भरे हुए हैं।

समाह साहिबा कहती हैं: मैंने समय के ख़लीफा को बहुत अधिक विनम्र और अपने आप पर बोझ डालने वाला पाया। हुज़ूर की इस गुणवत्ता को देखकर मेरे दिल की गहराई से समय के ख़लीफा के लिए बहुत दुआएं निकलीं।

सहर महमूद साहिबा कहती हैं: मैंने ख़ुदा तआला से वादा किया था कि मुझे समय के ख़लीफा के साथ मुलाकात करते समय कोई एक निशान दिखाना ताकि मेरा दिल संतुष्ट हो जाए। अत: मुलाकात के दौरान, मैंने हुज़ूर अनवर के चेहरे पर एक विशेष रोशनी देखी, जिसने मेरे दिल को स्कून के साथ भर दिया।

अमल साहिबा कहती हैं: मैंने दुआ की थी कि समय के ख़लीफा से पहली मुलाकात मुझे लगा कि मैं पृथ्वी पर सर्वशक्तिमान ख़ुदा तआला के प्रतिनिधि से मिल रही हूँ। इसलिए मैंने देखा कि एक तो हुज़ूर अनवर बहुत अधिक विनम्र और बहुत अधिक बोढ उठाने वाले हैं। दूसरे हुज़ूर अनवर ने हमारी परेशानी को देखकर बड़े प्यार से हमारा डर दूर करने के लिए बहुत ही सुखद तरीके से हमसे बातें कीं और उसका यह प्रभाव हुआ कि मुलाकात के अंत में हम सभी हंस रहे थे।

हुज़ूर अनवर की इक्तेदा में नमाज़ का वर्णन बताते हुए समाह साहिबा कहती हैं:

नमाज़ के दौरान सूरत फातिहा और अन्य तिलावत की गई आयतों के अर्थ समझ आते थे। मुझे आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस कथन की इस जलसा में जाकर समझ आई जिस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ज़िक्र की मजलिसों को फरिश्ते अपने पंखों से ढांप लेतेहैं। इस तरह, हुज़ूर अनवर की प्रेम और करुणा को देखकर रऊफ और हलीम के अर्थ समझ आ गए । हज़रत आपा जान से भी हमारी मुलाकात हुई। आप अपने पति के गुणों की छवि हैं। जलसा के दौरान हमने ग्रीन एरिया में बैठने की कोशिश की, जहां हुज़ूर अनवर को बारीकी से देखा जा सकता था। बैयतुस्सुबूह से हुज़ूर अनवर के प्रस्थान के समय लोग बाहर जमा हो चुके थे उन्हें देखकर मुझे यसरब वाले याद आ गए जब वे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगमन के इंतजार में शहर से बाहर खड़े थे। इस जलसा ने आमतौर पर हमारे मन में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके समय की याद को ताज़ा कर दिया। जलसा प्रत्येक रूप से आयोजित था और ड्यूटी देने वाले सभी बेहतरीन व्यक्ति थे। हमें कोई समस्या नहीं थी।

इस जलसा में इन की चौथी बहन लमीस अब्दुल जलील साहिबा भी इन की दावत पर आई थीं। उसने एक नए एस्टोनियाई मुसलमान से शादी की है और वहां पर ही रहती। इस के बारे में अमल अब्दुल जीलेल का उल्लेख है कि जब मैंने अपनी बहन को देखा, तो उसने हिजाब नहीं पहना था। इस स्थिति में, मैं इसे देखकर मुझे बहुत हैरानी हुई। मैंने कहा कि यह बहुत सभ्य थी। तब मैंने दुआ कि हे ख़ुदा तआला तू अपनी शक्ति का करिश्मा दिखा और लमीस जैसों को भी ईमान की तौफीक मिले।

जलसा के दूसरे दिन जब हम हुज़ूर अनवर का ख़िताब सुनने के लिए ग्रीन एरिया में बैठे, तो लमीस को भी हमारे साथ बैठने का मौका मिला। और जब हुज़ूर अनवर चले गए, तो हमारी इस बहन ने कहा कि मेरे में कई परिवर्तन हुए हैं, जिसके कारण मैंने बैअत करने का फैसला किया है। यह सुनते ही मैं रो पड़ी और उसे बताया कि मैंने तुम्हारे लिए बहुत दुआ की थी। अल्हम्दो लिल्लाह उसने बैअत कर ली और हिजाब भी ओढ़ लिया।

इसके बाद, इस्तांबुल का प्रतिनिधिमंडल ने भी हुज़ूर अनवर से मुलाकात की। अल्हम्दो लिल्लाह। उन्होंने बाद में रोया में देखा कि वह एक बहुत बड़ी जमाअत के बीच खड़ी है और कोई कहता है कि आपको बहुत ज्यादा अध्ययन करना चाहिए। इसके बाद, इस ने हमारी जमाअती की पुस्तकों का अध्ययन करना शुरू कर दिया है। पहली पुस्तक जो इस ने अध्ययन करनी शुरू की वह है इस्लामिक सिद्धांतों का दर्शन का अनुवाद है। इस का कहना कि यह बहुत उन्नत स्तर की किताब है।

नौमुबाईन की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार सात बजकर 40 मिनट पर नई बैअत करने वाले पुरुषों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात शुरू हुई। नई बैअत करने वालों की संख्या 22 थी। जनि में जर्मनी, अरब, तुर्की, पोलैंड और अफगानिस्तान के से सम्बन्ध रखने वाले नई बैअत करने वाले शामिल थे।

* अफगानिस्तान से सम्बंध रखने वाले नए बैअत करने वालों ने निवेदन किया कि वे फारसी, जर्मन और पश्तो भाषाएं बोल सकते हैं यहां जर्मनी में मुझे साढ़े तीन साल हो गए हैं। अभी मेरे इन्ट्रवियू का उत्तर नहीं आया इसी तरह अभी शादी नहीं हुई । 27 साल उम्र है । महोदय ने दुआ का अनुरोध किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा, अल्लाह तआला फज़ल फरमाए शादी भी हो जाएगी।

* एक मित्र ने अपने संकट और परेशानियों को दूर करने के लिए दुआ करने का अनुरोध किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया, ख़ुदा तआला आप के कष्ट दूर फरमाए और आप की के संकट को दूर।

* एक सीरिया से सम्बन्ध रखने वाले नई बैअत करने वाले ने कहा मेरे चार भाई थे जो सीरिया के फसादों में मारे जा चुके हैं। आब माता अकेली हैं और जॉर्डन में हैं। दुआ करें कि माता यहाँ मेरे पास आ जाए । हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

* नई बैअत करने वालों में से एक ने कहा कि मेरा सम्बन्ध तुर्की से है। मैंने बैअत की है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अल्लाह तआला आप के विश्वास, तथा ईमान में मजबूती पैदा करे। ।

* एक अरब नई बैअत करने वाले ने कहा कि मुझे त्वचा की बीमारी का कष्ट है इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

एक नई बैअत करने वाले ने कही कि हुज़र दुआ करें कि सीरिया और सारी दुनिया में अमन स्थापित हो जाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने फरमाया कि मैंने अपने ख़ुत्बों और ख़िताबों में इसी ओर ध्यान दिलाया है।

* एक जर्मन नई बैअत करने वाले ने पूछा कि मुलाकात का तरीका क्या है इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने फरमाया, आप को अपने प्रशासन से संपर्क करना

चाहिए। सूचित कर दें, आप की मुलाकात हो जाएगी।

एक नई बैअत करने वाले ने कहा, "मेरे यहां दो महीने के बाद बच्चा पैदा होने वाला है बच्चे के लिए और मेरे मार्गदर्शन के लिए दुआ करे। मैंने बेटे का अहमद नाम रखा है। पहले बेटा का नाम मुहम्मद है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने फरमाया अल्लाह तआला फज़ल फरमाए ।

* एक नई बैअत करने वाले ने कहा कि आज्ञाकारिता की शिक्षा दी जाती है। आज्ञाकारिता की सीमा क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मारूफ की आज्ञा की शिक्षा दी जाती है। जो भी मारूफ फैसला हो इस की इताअत करनी ज़रूरी है। ख़ुदा तआला ने शरीयत उतारी शरीयत की तालीम और आदेश का मानना और उन पर अनुकरण करना इताअत है। ख़ुदा तआला कहता है कि मेरी इताअत करो तो ख़ुदा तआला की बताई हुई शरीयत के अनुसार इबादत करना ही इताअत है। कुरआन करीम ने जो आदेश दिए हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो उपदेश फरमाए और आदेश दिए हैं, ख़लीफतुल मसीह इसके अतिरिक्त कुछ कह ही नहीं सकता तो इताअत यही है। एक बार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर रवाना किया। इस पर एक व्यक्ति को हाकिम नियुक्त किया था ताकि लोग उस की बात सुनें और उसकी आज्ञा मानें। आदमी (शासक) ने एक बार आग लगा दी और अपने साथी को आग में कूदने का आदेश दिया। कुछ ने उनकी बात नहीं सुनी और कहा कि आग से बचने के लिए मुसलमानों हुए हैं लेकिन कुछ लोग आग में कूदने के लिए तैयार हो गए । आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब इस बात का ज्ञान हुआ तो आप ने फरमाया, "यदि वे कूद जाते थे, तो वे हमेशा आग में रहते थे।" अत: ऐसा तरीके से, खुले तौर पर गुनाह वाले कार्यों में इताअत नहीं है। हुज़ूर अनवर ने कहा कि आज, तालिबान, दाइश जो निर्दयतापूर्वक आदेश जारी कर रहे हैं, ऐसा करते हैं कि ये करो। कूद जाओ छलांग लगा दो तो यह आज्ञाकारिता नहीं है। इस के परिणाम में तो जहन्नम है।

* एक जर्मन मेहमान ने कहा कि मेरी मां बीमार है इन के लिए दुआ का अनुरोध है तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: "अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

* एक नई बैअत करने वाले ने कहा कि मैंने 27 अप्रैल 2017 ई को बैअत की थी, मैं ख़ुद के लिए दुआ का निवेदन करना चाहता हूं, इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया, "अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

* एक अरब मित्र ने कहा कि मैं अहमदी हूं। मैंने आज ही बैअत की है। सीरिया में हमारा घर नष्ट हो गया है। मेरे माता-पिता कार में सो रहे हैं मैं उनके साथ था मैं यहाँ आ गया हूँ। उन के लिए मदद और दुआ का अनुरोध है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

* एक सीरियन नई बैअत करने वाले ने कहा कि हम यहां दो भाई हैं। दो भाई तुर्की में हैं। माता पिता में से एक लेबनान में हैं और एक सीरिया में हैं दुआ करें कि हम सब इकट्ठे हो जाएं।इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया, "अल्लाह तआला फज़ फरमाए।"

नौमुबाईन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 8 बजकर 5 मिनट तक जारी रही। आख़िर में, सभी नई बैअत करने वालों ने अपने प्रिय आक़ा के साथ बारी बीरा तस्वीर ख़ीचने का सौभाग्य प्राप्त किया और हाथ मिलाने का सौभाग्य भी प्राप्त किया।

अब कार्यक्रम के अनुसार, होटल कार्ल्सलो से बैयतुस्सुबूह (फ्रैंकफौर्ट) के लिए प्रस्थान था। आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई और काफिला यहाँ से फ्रैंकफोर्ट के लिए निकल गया।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की कार जलसा गाह परिसर से बाहर निकल रही थी तो रास्ते के दोनों तरफ खड़े हज़ारों लोगों पुरुषों और महिलाओं और बच्चियों ने अपने हाथ हिलाते हुए अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहा। जमाअत के लोग लगातार नारे लगा रहे थे। बच्चियां ग्रुप के रूपमें अलविदा की नज़्में पढ़ रही थीं।

लगभग एक घंटा यात्रा के बाद 45 मिनट के करीब सफर के बाद बैयतुस्सबूह तशरीफ ले गए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दस बज कर बीस मिन्ट पर नमाज़ मग़रिब तथा इशा की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास पर तशरीफ ले गए।

बैअत करने के बाद मेहमानों की प्रतिक्रयाएं

आज अल्लाह तआला के फज़ल से 33 आदमियों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के दस्ते मुबारक पर बैअत की सआदत हासिल की। ये बैअत करने वाले 11 अलग-अलग राष्ट्रों के हैं बैअत का सौभाग्य प्राप्त करने वालों की खुशी अविश्वसनीय थी। कुछ लोगों ने बैअत के बाद अपनी भावनाओं को व्यक्त किया, जो निम्नानुसार है।

* पुर्तगाल में रहते गिनी बिसाऊ से संबंधित एक दोस्त सालेह गानो साहिब को जलसा सालाना के अवसर पर बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली, वह बयान करते हैं:

यहाँ आने से पहले पूरी तरह से संतुष्ट नहीं था और मेरे मन में कई संदेह थे लेकिन यहां के परिवेश और समय के ख़लीफा के ख़ुत्बों का मेरे दिल पर बहुत प्रभाव पड़ा और मैंने देखा कि समय के ख़लीफा अपने ख़ुत्बों को कुरआन मजीद और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दौरान की हदीस के प्रकाश में प्रस्तुत करते हैं। हुज़ूर अनवर के ख़ुत्बों को सुनकर, मेरा दिल अब संतुष्ट था और मुझे इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं से परिचय हुआ। इसलिए मुझे बैअत का सौभाग्य मिला है। महोदय ने कहा: हमारी गिनी बसओ की क़ौम अज्ञानता की नींद सो रही है अब उसे जगाने की ज़रूरत है ताकि वह उस सच्चाई को स्वीकार कर ले।

* पुर्तगाल में रहने वाले मोरक्को के एक मित्र, मुहसिन ज़ुहदी साहिब को जलसा सालाना में शामिल होने और बैअत करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। वापसी की शीघ्र टिकट होने के कारण, वह पुर्तगाल के प्रतिनिधिमंडल के साथ हुज़ूर अनवर के साथ मिल नहीं सके। जाने से पहले उन्होंने ऑडियो संदेश में जमाअत और समय के ख़लीफा से अपने प्यार और मुहब्बत का इज़हार कुछ इस तरह किया:

" अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे बरकातुह। बिस्समिल्लाह हिर्रहमानिर्राहीम। मैं जमाअत अहमदिया का बहुत आभारी हूं, जिन्होंने मुझे सच्चे और पवित्र इस्लाम की राह दिखाई जो मैंने कहीं नहीं पाई। मैंने अहमदियत में सच्चाई और एक साथ काम करने की भावना देखी है, जो शायद ही कहीं नज़र आती है। मैं उन दिनों के लिए जो मैंने इन दिनों बिताए हैं आभारी हूं क्योंकि मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीख लिया है। मुझे ख़लीफा से व्यक्तिगत रूप से मिलने का मौका तो नहीं मिला, लेकिन मैं उन्हें बधाई देता हूं मुझे आशा है कि अगली बार निश्चित रूप से मिलेगा। धन्यवाद अहमदिया सलाम के साथ। "

* बेल्जयम से Akjoua Somia साहिबा, जिनका सम्बन्ध मोरक्को से है जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुईं। एक साल की तब्लीग़ के बाद, अल्लाह तआला के फज़ल से इस साल जर्मनी में हुज़ूर अनवर के हाथ पर बैअत कर के जमाअत अहमदिया में शामिल हुई हैं। महोदया अपने विचार विचार व्यक्त करते हुए कहती हैं: हुज़ूर अनवर का ख़िताब बहुत ईमान वर्धक था। हुज़ूर अनवर के ख़िताबों और निर्देशों ने मेरे अन्दर परिवर्तन पैदा कर दिया है। मेरी सारी परेशानी और डर जाता रहा और मुझे अपने अंदर एक नया परिवर्तन महसूस हुआ और अहमदियत को स्वीकार करने की तौफीक पाई।

* अल्बानिया से आने वाले एक मेहमान, दलीप गेर्जजी जो पिछले साल भी जलसा सालाना जर्मनी में आए थे। हुज़ूर अनवर ने उनसे पिछले वर्ष और इस साल के जलसा के बीच अंतर के बारे में पूछा। महोदय ने कहा: दोनों बार के जलसों से बहुत प्रभावित हुआ और हुज़ूर अनवर के भाषणों ने उनके अंदर काफी बदलाव पैदा कर दिया है जिस के कारण से महोदय जलसा के अंतिम दिन बैअत कर के अहमदियत में शामिल हो गए, जबकि उनके बेटे जो कि इस मुलाकात में उपस्थित थे, ने पिछले साल बैअत की। हुज़ूर ने इन को ईमान तथा मज़बूती की दुआ दी।

* लिथुआनिया से आने वाले एक मेहमान टॉमस-रचमानोव साहिब कहते हैं: मैं लिथुआनिया से अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ जलसा में शामिल हुआ। मैंने जलसा को यूट्यूब पर देखा हुआ था लेकिन मैंने ख़ुद यहां आ कर जो कुछ अपनी आंखों से देखा मरे पास उसे व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। यह जमाअत बहुत अच्छी प्यारी और शांतिपूर्ण है और ख़ुशी की बात है कि मैंने इसे अपने परिवार के साथ देखा है। जो व्यक्ति भी इस जलसा में शामिल हुआ है उस के लिए मेरी नेक इच्छाएं हैं।

* थॉमस साहिब ने ख़ुद को 2013 ई में बैअत की थी, जबकि उनकी पत्नी ने अपने दो बच्चों के साथ मुलाकात के बाद अहमदियत को स्वीकार करने का फैसला किया, और वह बैअत के साथ अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत में शामिल हो गई। थॉमस साहिब की पत्नी ने कहा कि मैं जमाअत में शामिल होकर अपने पति और बच्चों के साथ बेहतर जीवन शुरू कर रही हूं।

जलसा में शामिल होने वाले मेहमान और नई बैअत करने वालों की

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 8 February 2018 Issue No. 6

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

प्रतिक्रयाएं

जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने वाले ग़ैर जमाअत दोस्त और कुछ नई बैअत करने वालों ने हुज़ूर अनवर के भाषणों और जलसा की व्यवस्था और माहौल से असाधारण प्रभावित हुए और उस पर अपनी दिली भावनाओं को व्यक्त किया। इनमें से कुछ मेहमानों में की भावनाएं निम्नलिखित हैं:

* रेड क्रॉस संगठन के साथ काम करने वाले एक अरब मुस्लिम दोस्त खालिद मियाज़ भी जलसा में शामिल हुए। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, मैं जब अपने ग़ैर मुस्लिम दोस्तों को इस्लाम पर आपत्ति जताते हुए सुनता था तो मुसलमानों की आपसी नफरत और झगड़ों की वजह से इस्लाम की रक्षा नहीं कर पाता था। आज इस जलसा में आप लोगों की सामूहिक और व्यक्तिगत शांति और आपसी एकता को देख कर और आप के लोगों में ख़लीफा के लिए मुहब्बत आज्ञाकारिता को देख कर मेरा सिर गर्व से ऊंचा हो गया कि मैं ऐसी जमाअत को अपनी आंखें से देख लिया जिनके लोग शांति वाले हैं। और जिन का नेता ईश्वरीय सम्बन्ध रखने वाला है? अब मैं आप का उदाहरण बड़े आत्मविश्वास के साथ पेश कर के उन के इस्लाम पर आरोपों का उत्तर दे सकता हूं । और मैंने समय की ख़लीफा की तस्वीरें भी खींची हैं जो मैं अपने अरब रिश्तेदारों को दिखाऊंगा कि ख़ुदा तआला का ख़लीफा यह है।

* एक जर्मन मित्र मिशेल फैशर साहिब जलसा में शामिल हुए। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: इस जलसा में शामिल होने से पहले अख़बार ने पढ़ा है कि अहमदी एक शांतिपूर्ण लोग हैं। लेकिन मेरे दिल में आता था कि शांति का दावा तो और भी कई लोग करते हैं अब यहां आकर मैंने अपनी आंखों से देख लिया है कि शांति के दावे और व्यावहारिक प्रासंगिकता की गवाही केवल इस जलसा में ही मिल सकती है जहां लोग प्यार मुहब्बत से ख़ुद भा समय गुज़ारते हैं और आने वाले अन्य लोगों के लिए भी स्वागत कर रहे होते हैं। इतना बड़ा जलसा इतना शांतिपूर्ण है कि यह देखने के लिए आश्चर्यचकित हूं वरना तो पांच सौ से ज्यादा लोग कहीं इकट्ठे होते हैं तो लड़ाई झगड़ा हो जाता है। मैं जलसा में शामिल हो कर आप के अमन वाले माहौल को देख कर आप के शांति के दावे की पुष्टि करता हूं।

* एक महिला मारिया जोन्स, जिसका वास्तविक संबंध दक्षिण अमेरिका से है और बर्लिन में छात्र है, ने अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा: " मेरा इस से पहले इस्लाम या अहमदियत से कोई परिचय नहीं था। पैरागुए के मुरब्बी सिलसिला के माध्यम से मुझे जमाअत के बारे में ज्ञान हुआ था, और मुझे पता चला कि जर्मनी में जमाअत अहमदिया का एक जलसा होता है। तो मैं जलसा में भाग लेने आई हूं यहां आकर, मुझे बहुत हैरानी है कि इतने देशों, जातियों और रंगों के लोग कैसे एक साथ रह रहे हैं और चारों तरफ शांति और मुहब्बत का माहौल है। हर कोई संतुष्ट है किसी को भी कोई डर नहीं है मेरे लिए ऐसे शांतिपूर्ण जलसा में भाग लेना एक नया अनुभव है और मेरी इच्छा है कि मैं बर्लिन वापस जाकर जमाअत अहमदिया की मस्जिद से संपर्क करूं और इस जमाअत के साथ संबंध अधिक मज़बूत करों। मुझे आप लोगों में शामिल होकर एक दिल्ली संतुष्टि मिली है।

* एक जर्मन महिला मर्सिअगला जमाअत के साथ लगातार संपर्क में हैं। जलसा के दौरान वह बैअत के कार्यक्रम में शामिल हुईं इसके बाद अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मेरे सवाल तो लगभग एक करके सारे समाधान हो गए हैं और बैअत में आप के ख़लीफा के अस्तित्व में ऐसा आकर्षण और आध्यात्मिकता महसूस की है कि अब मुझे लगता है कि मैं अब अधिक देर मेहमान बन करनहीं आऊँगी, लेकिन अब मैं चाहता हूं कि मुझे स्वयं को जमाअत में शामिल होना चाहिए। महोदया करने लगीं " हुज़ूर के ख़िताब के प्रत्येक शब्द की मेरा दिल और दिमाग़ सत्यापित करता है और जब दिल और दिमाग़ में इतना सहयोग हो तो फिर बैअत कर लेनी चाहिए।

* मैसिडोनिया में एक सामाजिक कल्याण संगठन में काम कर रही तीन महिलाएं नतालिया साहिबा, ओली काक लीवा साहिबा और मारीजा सहिबा जलसा में शामिल हुईं। अपने विचार व्यक्त करते हुए, इन महिलाओं ने कहा: "हमारे आसपास कई मुसलमान हैं, लेकिन इस्लाम की यह किस्म और इसके सामाजिक प्रदर्शन से बिल्कुल अप्रत्याशित साबित हुए। हमने आपके लोगों और आपकी शिक्षाओं और आपके नेतृत्व को देखा है और हम यह महसूस करते हुए वापस जांएगी कि मुसलमान आपके समुदाय को पेश कर सकते हैं। यह समूह और इसके समारोह अन्य मुसलमानों के लिए उदाहरण हैं, और शांतिपूर्ण शिक्षा और ऐसा एक संगठित दल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने में सक्षम है। इस बार हम किसी के निमंत्रण के पर यहां आए हैं, लेकिन हमें उम्मीद है कि हम अगले साल मेहमानों को लाएंगे, और मैसिडोनिया के मुसलमानों को हमारे समुदाय का परिचय देंगी।

*लाटोया से एक ईसाई दोस्त माइकोलस साहिब जो छात्र हैं और धर्मों पर अनुसंधान में रुचि रखते हैं उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, मैं धर्म में गहरी रुचि रखता हूँ और इसलिए आप की जमाअत की शिक्षाओं को पढ़ा और अब इस मैं व्यावहारिक अभिव्यक्ति देख रहा हूँ मुझे लगता है कि आपका शिक्षण और आपका व्यवहार सकारात्मक और आकर्षक है मैंने जलसा में जुड़ने वाले लोगों में एक आध्यात्मिक भावना महसूस की है।

*लाटोया से एक पत्रकार महिला ऑगस्टाइन साहिबा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, "मैं पिछले छह महीने से इस्लाम के विभिन्न संप्रदायों में एक परियोजना पर काम कर रही हूँ। मैं इस्तांबुल गई और वहां विभिन्न इस्लामी संप्रदायों के साथ मुलाकात की। लेकिन यहां, मेरे इमाम जमाअत अहमदिया को देख कर मेरे दिल की स्थिति जो हुई उसी वर्णन करने ले लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैंने ख़लीफतुल मसीह से मुलाकात के दौरान पूछा कि इस समय मुल्लायत और उग्रवाद का क्या इलाज है? तो उन्होंने दो शब्दों में ही कठिन सवाल का पूरा जवाब दे दया। इमाम जमाअत अहमदिया ने कहा ऐसे मुद्दों का एकमात्र समाधान Right Education है। वास्तव में इन समस्याओं का समाधान केवल सही शिक्षा है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 7 का शेष

होकर जलसा से लाभांवित हो रहे हैं। ज़माना के की मुबारक बस्ती कादियान का दर्शन जमाअत के लोगों के ईमान में वृद्धि का कारण बन रही है।

किर्गीज़स्तान 1991 ई तक सोवियत संघ का हिस्सा था। यानी यह रूसी राज्यों में से एक राज्य गिना जाता था। सोवियत यूनियन के खत्म होने के बाद किर्गीज़स्तान एक स्वतंत्र देश के रूप में माना जाने लगा। यहाँ अहमदियत का आरम्भ 1996 ई में हुआ। इस साल किर्गीज़स्तान में, जमाअत के गठन को 21 वर्ष पूरे हो रहे हैं। कई बाधाओं के बावजूद जमाअत बढ़ रही है तब्लीग़ के रास्तों में रुकावटें डोला जाती हैं परन्तु, अल्लाह तआला सपने के माध्यम से मार्गदर्शन करता है हमारे लिए यह बात ईमान में मज़बूती का कारण बनती है कि बाधाओं के बावजूद, अल्लाह तआला लोगों को सच्चाई की तरफ कैसे खींच कर लाता है। 2015 ई में, हमारे अहमदी भाई, आदरणीय यूनुस आहमद साहिब शहीद हुए थे। यह वर्तमान किर्गीज़स्तान और पिछले सोवियत संघ यानी रूस देश में इस्लाम और अहमदियत के रास्ते में अपना खून पेश करने वाले पहले अहमदी शहीद हैं। विनीत इस मुबारक बस्ती में जलसा के इस मुबारक समय में आप सब से दुआ का निवेदन करता है कि शहीद मरहूम के खून की हर बूंद अनगिनत नेक प्रकृति और सईद रूहों को जमाअत में शामिल करने का कारण बने। और अल्लाह तआला शहीद के स्तर को बढ़ाता चला जाए। आमीन। अल्लाह तआला हमें और हमारी औलाद को ईमान में बढ़ाता चला जाए। जज़ाकमुल्लाह अहसनल जज़ा। इस के बाद पहले दिन का इज्लास समाप्त हुआ।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad